चलो चले सरकारी स्कूल

नवोदय क्रांति सामयिक पत्रिका

सबके लिए सरकारी शिक्षा, बेहतर हो हमारी शिक्षा

प्रथम अंक

वर्ष : २०२०

इस अंक में ...

- संपादकीय
- शैक्षिक लेख
- शैक्षणिक नवाचार
- विचार बिंदु
- लेखकीय विवरण
- मासिक विवरण
- प्रकाशन विशेष
- मासिक नवोदय

डिज़िटल इण्डिया के अंतर्गत अद्यतन टेक्नोलॉजी के साथ शिक्षा लेते सरकारी प्राथमिक स्कूल के विद्यार्थी

बेटी बचाओ बेटी पढाओ,
समाज को प्रगति के रास्ते
आगे ले जाओ

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

भारत के समर्पित सरकारी शिक्षकों का सबसे बड़ा परिवार

नवोदय क्रांति परिवार, भारत

NAVODAYA KRANTI TEACHERS TRAINING & RESEARCH CENTER

Kaithal Road, Kurukshetra, Near Kurukshetra University, Kurukshetra-136 118, (Hry)

Visit : www.navodayakranti.com E mail : navodayakranti@gmail.com

Internal Circular Only

नवोदय क्रांति सामयिक पत्रिका

संपादक समिति

संदीप ढिल्लों
मुख्य संपादक

स्मृति चौधरीजी
सह संपादक
उत्तर प्रदेश

अश्विन प्रजापति
गुजरात

निरंजन पटेल
छतीसगढ़

डॉ. विजय चावला
हरियाणा

राजीव थपलियाल
उत्तराखंड

कलीम खां
राजस्थान

गोपाल कौशल
मध्य प्रदेश

नवनीत गौर
झारखण्ड

परमजीत सिंह
हिमाचल प्रदेश

मनजिंदर कौर
पंजाब

रोहित कुमार
तेलंगाना

उपेन्द्र खमारी
उड़ीसा

निशा एस.
केरला

आरिफा मरियम
जम्मू कश्मीर

दीमी बिस्ट
महाराष्ट्र

विकास झा
बिहार

वाय. गंगाधर
आंध्रप्रदेश

नवोदय क्रांति सामयिक पत्रिका

अंक – पहला (१)

वर्ष : २०२०

मुख्य संपादक

- संदीप ढिलों – हरियाणा

संपादक मंडल

- स्मृति चौधरी – उत्तर प्रदेश
- अश्विन प्रजापति – गुजरात
- राजीव थपलियाल – उत्तराखंड
- कलीम खां – राजस्थान
- गोपाल कौशल – मध्य प्रदेश
- नवनीत कौर – झारखण्ड
- निरंजन पटेल – छतीसगढ़
- परमजीत सिंह – हिमाचल प्रदेश
- मनजिंदर कौर – पंजाब
- डॉ. विजय चावला – हरियाणा
- रोहित कुमार – तेलंगाना
- उपेन्द्र खमारी – उड़ीसा
- निशा एस. – केरला
- आरिफा मरियम – जम्मू कश्मीर
- दीप्ती बिष्ट – महाराष्ट्र
- विकास झा – बिहार
- वाय. गंगाधर – आंध्रप्रदेश

फोन नंबर : ९६१६८५४३१३

इ मेल :
navodayakranti@gmail.com

वेब :
www.navodayakranti.com

पत्र व्यवहार का पता :
नवोदय क्रांति टीचर्स ट्रेनिंग एन्ड रिसर्च सेंटर कैथल रोड कुरुक्षेत्र कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी के नजदीक हरियाणा १३६११८

संपादक की कलम से...

शिक्षा किसी भी देश के विकास का मूल होती है। शिक्षा व्यवस्था के आंकलन से ही समस्त राष्ट्र के बारे में एक सोच बनाई जा सकती है। यहाँ प्रत्यक्ष रूप से शिक्षक की राष्ट्रनिर्माण में भागीदारी का पता चलता है। किसी भी देश का भविष्य ठीक वैसा ही होगा जैसा उसके शिक्षक निर्माण करेंगे। एक बेहतरीन शिक्षक सदैव सीखता रहता है और रचनात्मकता व सृजनात्मकता उसके आभूषण होते हैं।

नवोदय क्रांति परिवार इसी दिशा में पूरे देश मे शिक्षा को केवल सरकारी व निशुल्क व्यवस्था के रुप में स्थापित करके भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने के लिए प्रयासरत है। देश के अलग-अलग क्षेत्रों, धर्मो, सम्प्रदायों, भौगोलिक स्थितियों व सामाजिक व्यवस्थाओं से जुड़े अध्यापकों के विचारो को जब एक मंच नवोदय क्रांति पर संगठित किया गया है तो यहाँ यह भी जरूरी हो जाता है कि सभी को अभिव्यक्ति के लिए पूर्ण अवसर दिए जाएं ताकि एक दूसरे की संस्कृति व कार्यशैली को समझकर राष्ट्रनिर्माण के इस अहम दायित्व को पूरा किया जा सके। उनके मनोभावों को लेख, कविता, आलोचना,नवाचार, शिक्षण शास्त्र, शैक्षिक समस्या समाधान कुशलता आदि के आधार पर एकसूत्र में पिरोया जा सके। शिक्षक की स्वतंत्र अभिव्यक्ति ही राष्ट्रनिर्माण में अहम भूमिका निभा सकती है।

साथ ही अलग-अलग माहौल में अध्ययन करने वाले छात्र-छात्राओं के बाल मन की कुशल अभिव्यक्ति भी हमें एक देश, एक शिक्षा पद्धति के महान लक्ष्य तक पहुंचाने में आधार स्तम्भ का काम करेगी। नवोदय क्रांति मंच पर बच्चों को भी सृजनात्मक एवं कल्पनाशील विचारों के लिए पूरा अवसर मिलेगा और इससे उनकी सीखने में रुचि बढ़ेगी ।

जिन शिक्षाविदों व बच्चों की कृतियां इसमें शामिल की गई है । उन सभी के लिए यह एक खास राष्ट्रीय स्तर का महत्वपूर्ण दस्तावेज साबित होगा, जिसकी रचनाओं में सम्पूर्ण भारत के दर्शन होंगे। जिन साथियों की बेहतरीन रचनाओं को स्थान नही मिला वो निराश न हों ,आगामी पत्रिका में उनको प्राथमिकता के आधार पर स्थान दिया जाएगा। आप साथियों के द्वारा भेजी गई सभी रचनाए एक से बढ़कर एक थी परंतु सैंकड़ों लाजवाब कृतियों को एक ही पत्रिका में समाहित करना सम्भव नहीं था ।

समस्त भारत के बच्चों व शिक्षकों से मेरी अपेक्षा है कि नवोदय क्रांति सामयिक पत्रिका की श्रृंखला के प्रथम अंक को पढ़कर अपने उत्तम सुझाव व मार्गदर्शन से हमें अवगत करवाएंगे। पूर्ण विश्वास है कि आपके बहुमूल्य सुझावों से इसकी गुणवत्ता निरन्तर बढ़ेगी और भारत में सरकारी शिक्षा में विश्वास व इसका प्रसार-प्रचार बढ़ेगा ।

इस मैगज़ीन के निर्माण में प्रत्येक राज्य के सम्पादक ने अहम भूमिका निभाई है । कई साथियों ने इसकी प्रूफ रीडिंग से लेकर डिजाइनिंग तक दिन रात कार्य किया, उनका अतिरिक्त आभार प्रकट करते हुए, मैं भारत के सभी आदरणीय अध्यापक साथियों, नवोदय क्रांति परिवार के समस्त साथियों और बच्चों को पत्रिका प्रकाशन के अवसर पर हार्दिक बधाई प्रकट करते हुए अभिनंदन करता हूँ।

--- गुरुजी सन्दीप ढिल्लों

क्रम सूचि

१.	सफरनामा	स्मृति चौधरी	२
२.	Girl Child - Education & Security	रेखा महाजन	६
३	नवाचार	अरविंद कुमार	९
४.	शैक्षिक लेख	अब्दुल कलीम खां	१४
५.	प्रयास	अंजू बाला	१५
६.	कहानी	रोहित कुमार	१६
७.	To My Good Old Eys	नक्षत्रा	१७
८.	सामुदायिक सहभागिता	कैलास ठाकुर	१८
९.	शैक्षिक लेख	कमलेश बलूनी	२०
१०.	शैक्षिक लेख	राजीव थपलियाल	२२
११.	विचार	दलीप कुमार	२४
१२.	टी.एल.एम. निर्माण	अशोक कुमार	२५
१३.	प्रादेशिक त्यौहार	निशा एस.	२६
१४.	प्रयास	कपिल राघव	२७
१५.	प्रार्थना सभा	लक्ष्मी नैथानी	३०
१६.	टी.एल.एम. निर्माण	ऋषि कुमार गुप्ता	३१
१७.	टी.एल.एम. निर्माण	मोनिका सक्सेना	३१
१८.	अंक चक्र	दीपकुमार शर्मा	३२
१९.	शैक्षिक लेख	शिशुपाल साहू	३३
२०.	दिन विशेष (अप्रैल)	जाग्रति अटारा	३४
२१.	शैक्षिक लेख	कल्याणमय आनंद	३५
२२.	शैक्षिक लेख	श्रीमती नंदा देशमुख	३६
२३.	टी.एल.एम. निर्माण	डॉ. विजय चावला	३७
२४.	शैक्षिक लेख	सुनीता सैनी	३९
२५.	शैक्षिक लेख	डॉ जितेन्द्र पाल	४१
२६.	शैक्षिक लेख	अब्दुल कलीम खां	४२

नवोदय क्रांति परिवार

सफरनामा

सफरनामा में आपके साथ साझा की जाएगी कहानी नवोदय क्रांति अभियान की । लीजिये शरुवात करते हैं इसके संस्थापक के परिचय से । मैं आपका परिचय एक ऐसे व्यक्तित्व से करा रही हूं जिसे परिचय की कोई आवश्यकता नहीं है परंतु हम सब को जरूरत है उस व्यक्तित्व के बारे में जानने की जिसने पूरे देश को एक सूत्र में पिरो दिया। मध्यम वर्गीय कृषक परिवार में पिता श्री प्रेम सिंह एवं माता श्रीमती भूली देवी जो कि हरियाणा के जींद जिले के एक छोटे से गांव शामदो में 2 मार्च 1982 को विलक्षण प्रतिभा के धनी एक बालक का जन्म हुआ जिसका नाम सबने लाड-प्यार से संदीप रखा।पिताजी की आस्था शुरू से ही सरकारी शिक्षा में रही । बालक संदीप की प्राथमिक शिक्षा गांव के ही सरकारी विद्यालय से कराई गई। जल्द ही बेहद शालीन,अनुशासित एवं कर्मठ शिष्य संदीप अपने शिक्षक श्री भीम सिंह जी का प्रिय हो गया और उन्होंने बालक की आगे की शिक्षा के लिए नवोदय विद्यालय का फॉर्म भर दिया। परीक्षा में सफल होने पर 1993 में छठी कक्षा में नवोदय विद्यालय खुंगा, कोठी,जिला जींद में बालक संदीप का दाखिला हुआ जहां से इन्होंने दसवीं कक्षा उत्तीर्ण की एवं कक्षा ग्यारहवीं और बारहवीं नवोदय विद्यालय पाबरा, हिसार से उत्तीर्ण की। कक्षा 6 से 12 तक नवोदय विद्यालय में अपने अध्ययन के दौरान के माहौल से एकदम अलग बहुत ही बेहतरीन शैक्षणिक माहौल देखकर इनको अत्यधिक खुशी हुई। माता-पिता भी खुश थे कि बेटा अच्छा पढ़ लिख लेगा क्योंकि हॉस्टल में पढ़ाने का एक सामान्य कृषक परिवार का सामर्थ्य नहीं था। उधर बाल मन में बार-बार एक ही विचार आता कि सभी बच्चों को ऐसे ही स्कूलों में पढ़ने का मौका क्यों नहीं मिलता? क्यों सहपाठी गांव के स्कूल में ही रह गए और सोचा करते थे कि सभी स्कूल ऐसे ही होने चाहिए।प्रारंभ से ही अपने पिताजी को आदर्श मानने वाले और उनकी शिक्षा पर सदैव अमल करने वाले प्रतिभावान और अनुशासित बालक सभी अध्यापकों एवं बच्चों का प्रिय हो गया।

बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण करते-करते इनके मन में एक विचार पूरी तरह से घर कर गया था कि सभी विद्यालय नवोदय विद्यालय जैसे होने चाहिए लेकिन जब भी अपने मन की बात किसी से साझा करते तो निराशा ही हाथ लगती लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी । अपनी मेहनत और लगन का प्रदर्शन करते हुए स्नातक की पढ़ाई के साथ-साथ इन्होंने गरीब और प्रतिभावान बच्चों के लिए निशुल्क कोचिंग करानी शुरू कर दी क्योंकि अपने उस सपने को पूरा करना था कि सभी बच्चों को नवोदय विद्यालय जैसे बेहतरीन स्कूलों में दाखिला मिले। कोचिंग कराते हुए समाज से जुडने का मौका मिला नित नए अनुभव प्राप्त हुए परंतु विभिन्न सामाजिक समस्याओं को जब देखते तब मन बहुत दुखी होता और एक ही विचार,जवाब के रूप में सामने आता कि इन सब समस्याओं का केवल एकमात्र समाधान शिक्षा ही है। खुद को शिक्षा के प्रति पूरी तरह समर्पित कर चुके बालक संदीप अब समाज में गुरुजी संदीप ढिल्लों के नाम से जाने जाने लगे थे।अब स्वयं की पढ़ाई के साथ साथ बच्चों के लिए निशुल्क कोचिंग क्लासेस लगातार चलती रही। इसी दौरान गुरुजी संदीप ढिल्लों ने विद्यालयों और प्राइवेट शिक्षण संस्थानों से जुड़ कर प्राइवेट शिक्षण व्यवस्था को समझने के लिए वहां पढ़ाने का कार्य भी शुरू कर दिया।प्रबंधन में काफी रुचि और पकड़ होने के कारण विभिन्न संस्थाओं की प्रबंधक कमेटी में करने का भी अवसर आपको मिलता रहा। इसी बीच डिप्लोमा इन एजुकेशन पुरा हो चुका था और 2007 में शिक्षा विभाग हरियाणा में बतौर अतिथि अध्यापक आपकी नियुक्ति हुई , जिससे "सरकारी शिक्षा, सबके लिए हो बेहतर शिक्षा" का सपना विश्वास में परिवर्तित होता नजर आया और सबके लिए बेहतर सरकारी शिक्षा उपलब्ध कराने का

विचार दृढ़ हो गया। प्रथम नियुक्ति वाले विद्यालय में प्रभारी विरेंद्र कुमार जी के साथ साथ सुशील जी, सुरेश जी, बलवान जी, विक्रम जी आदि युवा ,मेहनती और जुनून से कार्य करने वाले साथियों का सानिध्य प्राप्त हुआ। गुरु जी ने अपने विचार साथियों के साथ साझा किए और 2007 में वीरेंद्र जी के मार्गदर्शन में मुहिम चलाई थी गांव के सभी बच्चे सरकारी विद्यालय में ही दाखिला लें। पिताजी द्वारा दी गई शिक्षाएं हमेशा साथ रहती थी बेटा जिस दिन विद्यालय में शिक्षण कार्य कराए बिना घर वापस आ गए उस दिन की तनख्वाह बेईमानी की होगी। इसलिए आप सदैव कोशिश करते कि जितना अब समाज से प्राप्त कर रहे हैं उससे ज्यादा आप समाज को वापस दे सकें। इसी क्रम में 4 साल के अनियमित दौर के बाद बतौर नियमित अध्यापक अंबाला में 2011 में आप की नियुक्ति हुई। अपने प्रथम विद्यालय एवं साथी अध्यापकों से जो भी सीखा वह लाजवाब था और स्थाई नियुक्ति मिलते ही शिक्षा में सुधार करने की इच्छा और अधिक बुलंद हो चुकी थी। एक दिन पड़ोस के गांव में कार्यरत एक बेहतरीन सकारात्मक साथी श्री दिनेश वर्मा जी से आपकी भेंट हुई और यहां भी आपको अपने विचारों को उनसे साझा किया उनका साथ मिला फिर इसी कड़ी में हरिओम जी, सतीश जी, तेजपाल जी, राजेश जी ,ऋषि पाल जी, विनोद जी ,घनश्याम जी आदि साथी जुड़ते चले गए। आपने सरकारी शिक्षा को एकमात्र लक्ष्य के रूप में लेते हुए हरियाणा के सभी शिक्षक साथियों तक अपनी विचारधारा को पहुंचाने के लिए साहा में एक बैठक का आयोजन किया जिसमें बतौर मुख्य वक्ता मनोविज्ञान के प्रोफेसर आदरणीय श्री सज्जन जी उपस्थित हुए। सभी उपस्थित साथियों को सरकारी शिक्षा को एकमात्र लक्ष्य के रूप में स्थापित करने का विचार बेहद पसंद आया और सभी ने मिलकर गुरुजी संदीप ढिल्लों के विचारों के साथ मिलकर चलना सुनिश्चित किया। जिसमें मुख्य था कि सभी अध्यापकों की एक ऐसी यूनियन बननी चाहिए जो केवल टीचिंग लर्निंग पर कार्य करें, बच्चों के लिए नए टीएलम बनाए, अपने शिक्षण विधियों को एक दूसरे के साथ साझा करें।अभी तक संपूर्ण भारत में जितनी भी अध्यापक यूनियन कार्यरत थी सभी का एकमात्र लक्ष्य अध्यापक हित था परंतु पहली बार किसी ने शिक्षा एवं छात्र हित के लिए अध्यापक यूनियन बनाने की बात कही थी, इसलिए चुनौती बहुत बड़ी थी। लेकिन बहुत जल्दी साथियों का उत्साह ठंडा पड़ गया और इसी वजह से आपने अपने स्कूल और स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों पर ही फोकस करने का निर्णय लिया। इस विद्यालय में भी ऋषि पाल जी एवं तेजपाल जी दोनों शिक्षकों का साथ और विश्वास मिला तीनों ने मिलकर कार्य करना शुरू किया। विद्यालय समय के पश्चात भी यह तीनों अपना समय विद्यालय को देगें । बच्चों को विद्यालय समय के पश्चात एवं छुट्टी के दिनों में भी शिक्षण कार्य कराया जाने लगा। अब विद्यालय का समय सुबह 7:00 से शाम 6:00 बजे तक का हो गया, एक ऐसा विद्यालय जहां कोई अवकाश दिवस नहीं था। तीनों अध्यापकों के ऐसे समर्पण को देखकर जल्द ही अभिभावक एवं छात्रों का सहयोग मिलने लगा। उत्साहित होकर गुरुजी संदीप ढिल्लों जी ने विद्यालय में एक स्मार्ट क्लास तैयार कर दी और सामाजिक सहयोग से बच्चों के बैठने के लिए पानी के पानी के लिए अलग-अलग स्टील की टंकियां विद्यालय में लगवाई। छात्रों ने प्रतिभा के रूप में क्लास रेडीनस कार्यक्रम में विजेता बन कर दिखाया और विद्यालय का नाम जिले के बेहतरीन विद्यालयों में गिना जाने लगा। इसी बीच सीखने सिखाने के उद्देश्य से टी एल एम निर्माण में राज्य स्तर तक प्रतिभाग करने का आपको अवसर प्राप्त हुआ। सबके लिए सरकारी शिक्षा के अपने विचार को मूर्त रूप देने के लिए परिवार को उसी गांव में रहने के लिए आपने बुला लिया, लेकिन दिनचर्या वही रही। 2:30 बजे छुट्टी के बाद घर आना, खाना खाकर फिर वापस 4:00 बजे विद्यालय चले जाना , बच्चों को बुलाकर उनका होमवर्क कराना और 6:00 बजे तक उनके साथ विद्यालय में ही रुकना।आपके प्रयासों ने विद्यालय को पूरी तरह से बैगलेस विद्यालय में परिवर्तित कर दिया जिसके कारण अभिभावक और सभी छात्र पूरी तरह दिल से जुड़ चुके थे। यहां तक कि जब भी वह गुरु जी संदीप ढिल्लों को विद्यालय की साफ-सफाई करते देखते तो अभिभावक उन्हें हटाकर स्वयं साफ-सफाई मे लग जाते। प्रत्येक अभिभावक-अध्यापक मीटिंग में सभी अभिभावक हमेशा समय पर पहुंचते और जरूरत पड़ने पर गुरुजी संदीप ढिल्लों के साथ तन मन धन से विद्यालय की सेवा करने को तत्पर रहते थे।

उन्हीं दिनों बेहद सख्त एवं इमानदार पत्रकार के रूप में जाने जाने वाले एक पत्रकार राहुल वालिया जी ने विद्यालय की प्रसिद्धि को सुनकर अपने माता-पिता के साथ लेकर गुरुजी संदीप ढिल्लों के कार्यों की सच्चाई जानने के लिए उनके विद्यालय का भ्रमण किया । कक्षा कक्ष में जा जाकर प्रत्येक ने छात्रों का रिस्पांस देखा गुरु जी से बात की और इतनी प्रभावित हुए कि अपने बेटे का दाखिला एक बहुत बड़े निजी स्कूल से हटाकर गुरुजी के प्राथमिक विद्यालय में करा दिया।

आपके माता जी व पिताजी ने जो संस्कार अपने पुत्र में रोपे थे, समय-समय पर वह उन्हें जानने और देखने के लिए अपने पुत्र यानी गुरु जी संदीप ढिल्लों के विद्यालय में आते और जांचते थे कि क्या-क्या सुधार हो रहे हैं? पिताजी बातों ही बातों में कहते कि "बेटा तुमने अपने स्कूल को बढ़िया बना दिया और शायद तुम्हारे जैसे कुछ और तुम्हारे साथी भी अपने-अपने विद्यालयों को बेहतर बना दें लेकिन इससे कोई ज्यादा बड़ा परिवर्तन देश की शिक्षा व्यवस्था में नहीं हो सकता, जब तक की सभी विद्यालय, तुम्हारे विद्यालय जैसे ना हो जाए।"

2016 में आपका ट्रांसफर कुरुक्षेत्र हो गया लेकिन पूर्व के विद्यालय के जो छात्र अब 10वीं और 11वीं कक्षा में जा चुके थे वह सब एवं उनके अभिभावक लगातार गुरुजी के संपर्क में बने रहे और यही सबसे बड़ा इनाम होता है एक शिक्षक के लिए। और यहां से सपनों को एक और उड़ान मिली इस विद्यालय में दूसरे अध्यापक साथी श्री सुनील ढांडा जी बेहद सकारात्मक दृष्टिकोण वाले कुशल मार्गदर्शक के रुप में प्राप्त हुए। दोनों ने मिलकर अपने आसपास के 10 स्कूलों का एक ऐसा समूह बनाया कि प्रत्येक स्कूल से हजार रुपए प्रतिमाह कलेक्शन इकट्ठा होता और ड्रॉ के माध्यम से पर्ची निकाल कर किसी एक विद्यालय में उस पैसे का इस्तेमाल किया जाता। विद्यालयों की व्यवस्था इससे ठीक होती जा रही थी परंतु मन में संतुष्टि नहीं थी। परिवार ने अब कैथल आकर रहना शुरू किया और पड़ोसी के रूप में फिर से प्राप्त हुए श्री वीरेंद्र जी जो कि प्रथम नियुक्त विद्यालय के इंचार्ज थे। विद्यालय और विद्यालय समय के बाद एक जैसी विचारधारा के साथियों ने जुड़ना शुरू किया, साथियों का सहयोग और प्रोत्साहन मिलता गया और लगने लगा जैसे अब प्रकृति कुछ बड़ा करने की ओर इशारा कर रही है। घर में एक मुख्य आय का स्रोत एक निजी विद्यालय में साझेदारी थी, लेकिन गुरुजी संदीप ढिल्लों के कठोर निर्णय को देखते हुए परिवार ने वह विकल्प छोड़ दिया और एक ही लक्ष्य धारण कर लिया कि पूरे देश में केवल सरकारी शिक्षा ही एकमात्र शिक्षा व्यवस्था होगी । साझेदार श्री जोगेंद्र जी को उनका यह निर्णय पसंद नहीं आया और उन्होंने जानना चाहा कि सब कुछ इतना बढ़िया चल रहा है तो अचानक यह निर्णय क्यों लेकिन गुरुजी का जवाब था इन स्कूलों में देश का भविष्य नहीं बन सकता यह विद्यालय जल्द ही बंद हो जाएंगे और पूरे देश में केवल सरकारी शिक्षा ही होगी। उस समय तो यह बात जोगेंद्र जी को मजाक लगी लेकिन आज वह इस बात पर यकीन करने लगे हैं ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार हम और आप।

अपने दृढ़संकल्प की प्राप्ति के लिए आपने अपने यूट्यूब चैनल और फेसबुक पेज "खुशी द हैप्पीनेस"का नाम बदलकर "नवोदय क्रांति" कर दिया, और यहीं से जन्म हुआ नवोदय क्रांति का, लेकिन नाम नवोदय क्रांति ही क्यों? नवोदय का अर्थ है नया उदय और क्रांति व संघर्ष जो इस नए उदय के लिए हम सबको करना होगा। नए भारत के उदय के लक्ष्य के साथ श्री संदीप ढिल्लों जी की कल्पना जमीनी हकीकत पर इस नाम से उतरी। सरकारी शिक्षा को बेहतर बनाना, सरकारी शिक्षकों को प्रेरित करना, तमाम साथी और सहयोगी जो बेहतर कार्य कर रहे हैं या करना चाहते हैं उनसे संपर्क करने का कार्य अब शुरू हो चुका था और यहीं से शुरू हुआ नवोदय क्रांति का सफर।

उसके बाद टीचर्स को ओर सरकारी शिक्षा को बेहतर बनाने व नवोदय क्रांति को एडुकेशनल ब्रांड बनाने का सिलसिला शुरू हुआ । ध्येय वाक्य , सबके लिए सरकारी शिक्षा बेहतर हो हमारी शिक्षा, एक लोगो , टैग लाइन चलो चलें सरकारी स्कूल।

थीम सांग चलो चलें सरकारी स्कूल। देश को एक नई दिशा देने वाला इतना महत्वपूर्ण लक्ष्य जो देश की सभी समस्याओं का समाधान कर सकता है उसके लिए पूर्णकालिक व बेहतरीन प्रबन्धन के साथ फुल टाइम कार्य योजना बनाकर आगे बढ़ना जरूरी था। समय के साथ साथ साथी जुड़ने लगे,कार्य शुरू हो चुका था,सबसे पहले दूसरे साथियो को ओर स्कूलों को प्रोमोट करने का कार्य शुरू किया गया । 15 अगस्त 2017 को सरकारी स्कूलों में आयोजित कार्यक्रमों को सोशल मीडिया पर प्रसारित करने का कार्य शुरू हुआ। परिवारजनों से एक अनुबन्ध हुआ कि अब मेरा जीवन इस कार्य को समर्पित है तो सभी सहयोग देंगे व साथ देंगे। ये आश्वशन परिवार से लिया गया। परिवार ने दिल खोलकर समर्थन व साथ दिया । माता पिता ने आशीर्वाद व पत्नी ने समय व सहयोग का वादा दिया और लक्ष्य की ओर कदम बढ़ते गए।

स्मार्ट क्लास व स्मार्ट स्कूल का एक कॉन्सेप्ट जो जहन में था उसके साथ शुरुआत की गई जिसमें काफी साथियो ने मार्गदर्शन व सहयोग दिया और ऐसे ही तार से तार जुड़ते गए। भारत के विभिन्न राज्यो के बेहतरीन शिक्षकों के साथ साथ विदेशो में रहने वाले भारतीय भी इस मुहिम से जुड़ने लगे। इस दौरान श्री अजय लोहान ने सोशल मीडिया में नवोदय क्रांति को काफी प्रोत्साहन दिया । यूट्बव चैनल आदि का कार्य अनिल जी व वीरेंद्र जी ने किया । स्कूल के बाद फोन और सोशल मीडिया पर आपका सारा समय व्यतीत होने लगा, हर रोज नए नए साथियों के जुड़ने से हौसला बढ़ता रहा। एक जुनून धुन की तरह मन मे घर कर चुका था और लक्ष्य दिखाई दे रहा था। सोशल मीडिया पर काफी प्रचारित व प्रसारित हो चुका था, लोगों का विश्वास बन चुका था एवं नवोदय क्रांति एक ब्रांड के रूप में स्थापित हो चुका था। एक बहुत बड़ी टीम के रूप में देश के बेहतरीन शिक्षक इससे जुड़ चुके थे। नवोदय क्रांति को देश के प्रत्येक राज्य में पूरी तरह प्रसारित करने के लिए एवं किसी कार्यालय से सम्पर्क करने या किसी कार्यक्रम की अनुमति लेने के लिए नवोदय क्रांति का रजिस्ट्रेशन कराना,अब जरूरत बन चुकी थी। जून 2018 में नवोदय क्रांति का रजिस्ट्रेशन करवा लिया गया और रेजिस्ट्रेशन में नाम फाइनल किया गया "नवोदय क्रांति परिवार"। लेकिन नए भारत के उदय की क्रांति के लिए आंदोलन,धरना,प्रदर्शन को वर्जित की श्रेणी में रखा गया ताकि इसमे कोई राजनीति न हो सके और बिना किसी आंदोलन इसको एक परिवार की विचारधारा बनाकर पूरे देश को, इसी परिवार का सदस्य बनाकर, लक्ष्य पाने के लिए तैयारियां शुरू कर दी गई ताकि गांधी जी की तरह "दे दी हमे आजादी बिना खड़क बिना ढाल" नवोदय क्रांति भी अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकें। 2018 के अंत तक आते-आते लगभग 15 राज्यो के शिक्षक जुड़ चुके थे । सभी साथियों ने कुरुक्षेत्र में एक मीटिंग करके, एक राष्ट्रीय कार्यक्रम करने की योजना बनाई, जिसमें हरियाणा की पूरी टीम उपस्थित रही और तय हुई राष्ट्रीय कार्यक्रम की तिथि 2 व 3 फरवरी एवं स्थान 2019 कुरुक्षेत्र।

सफ़र अभी जारी है ...

- स्मृति चौधरी – उत्तर प्रदेश

Girl Child - Education & Security

Girl Child* - *Education & Security* .....Facilities provided for girls in Government schools

Being a woman, social activist & educationalist, i usually like to write for the rights of women It gives me immense pleasure here to write on the burning topic of modern era that is Girl Child... Education & Security
Education is an essential part of a living being whether it is a boy or a girl. Education helps an individual to be smarter to learn new things and to know about the facts around the world.
Women Education / Girl Education in India is the need of the hour. Rate of girl education in India is extremely low. Educating the girl child must be a necessity for the overall development of the country as women play an essential part in all around process of the country.
It has been rightly said," If you educate a man ,you educate a person. But if you educate a woman,you educate the entire family(nation)
I absolutely agree that woman is the artist (as a mother, teacher, sister,wife etc) who sculptures the society. Hats off to the perfect Sculptor (woman)
Girls/ women are also found to be more determined and committed towards education and they generally out perform boys in various examinations .Girls are found to be more diligent coupled with higher maturity levels than boys. Educated girls are known to support their parents in their old age,when their brothers fail to do so. Investing in education of girls bring high returns in terms of breaking cycles of poverty and aiding economic growth. Educated girls have a wide ranging impact on society and human development.
But generally in rural areas where people rarely want to send their daughters to school, they think that education is not so important for girls as they grow up and eventually get married and settled down. People think that girls should be stay at home,help their mother and family and nothing else.This mentality is completely wrong as since girl education can bring around a massive revolution in the society as lack of women education weaken the potent part of the society.
There are several advantages of developing female education in India. Since education can play an important role in the development of countries.It promotes gender equality which is fundamental human right . It improves literacy rate,alter regressive nature of society, reduce child marriage, reduce infant mortality, reduce maternal mortality,reduce population explosion,decrease malnutrition ,reduce domestic and sexual violence and improve socio-economic growth.
But still there are many barriers to educating girls . Poverty, discrimination,exploitation ,lack of funding ,poor sanitation,lack of separate toilets and washrooms for girls , lack of female teachers in schools,violence,bullying and harassment at school,early marriage etcetera are threats to girls education.
Education is the most important weapon which we can use to change the world. Punjab Government under the chairmanship of our worthy chief Minister Captain Amrinder singh has worked on a larger scale in this regard that is for development of Girl education and emphasis is on Save the girls and educate them.
Education of girls in general has been a high and topmost priority with the Government of punjab & Department of school education.In the new millennium ,Punjab has consolidated its earlier educational

reforms with increased resources and stronger policy committments for achieving elementary education for all children particular girls.

In the new budget issued on Feb 2020 ,Punjab Government had spoken for totally free education of girls till University level . To make education more accessible to girls ,Punjab Chief Minister Captain Amrinder has announced free education for girls from kindergarten to doctorate in government institutions. Alongwith that ,there are also plans to give free textbooks to students from government schools and free WiFi for all government colleges and 13000 Primary schools. Captain Singh said that he plans on giving utmost importance to school education by increasing the budget for the education sector.

Punjab Government and Department of school Education has been given a lot of facilities in government schools of punjab to increase enrollment of girl students in government school or to support girl education in Punjab. Out of total 19108 Government schools in punjab 1,17,9066 girls are taking free education. About 5,47,845 girls are enrolled in 12839 primary schools, 2,82,367 girls in 2660 middle schools, 1,90,060 girls in 1738 High schools and 1,58,794 girls are already enrolled in 1871 senior secondary schools of Punjab. Punjab Government & Department of school education has been providing following facilities for development of girl education in state .

Free education to all girls.

Free uniforms to all girl students from class first to Eighth class.

Free text books to all girls from class First to Tenth class.

Separate washrooms for girls in all schools.Punjab government has issued grant for seperate washrooms for girls for their privity & sanitiation ...All 19108 schools of punjab has provision of separate washrooms for girls.

*Scholarship schemes for girls*for those who take first three positions in their respective classes in annual exams. scholarships for 10+2 girl students who got outstanding results in exams.

Karate coaching to girls has been provided for their self protection..For this from last few years Rs 5000 grant had been given to each & every girl & coeducational school for karate training where Karate coach used to provide two months training to 9th & 10 th class students from December to February month..out of grant of rs 5000, Rs 3000 had been given to coaches ,Rs 600 as award to first three winner of karate competition held in the end of Karate coaching and remaining 1400 rs had been spent on refreshment of those girl students...last year Department of school Education arranged karate training to all its PTs , DPEs and lecturer physical education...In 2020 Karate training is given to girls students of 6th to 8th classes by their trained physical education teachers.

Motivational Grant for girls under National Scheme of Incentive to girls for secondary education,fixed deposit vof rs 3000 has been provided to students of SC category provided ...Under this scheme rs 3000 as a motivation deposited in girls account who pass out in Eighth class & took admission in Ninth class...passing out 10 th class & after 2 years of passing 10 th class they can withdrew all amount with interest .

Resedential facility for 100 girls under Kasturba Gandhi Balika Vidyalaya Scheme where 100 girls are given free residential facility in a hostel .Three times free nutritious meal ,free coaching / tution, stationary

is provided along with free schooling & rs 100 as monthly stipend to each & every girl student ... 19 hostels are established under KGBVY for girls students of 6th to 8th class of weaker sections of society.

Remedial Coaching to weak students Maths & Science subjects extra coaching from class sixth to Eighth class is given to girl students ..For that rs 500 remuneration given to teachers who gave this two months free coaching to students before annual exams.

Bicycles to all girls students of class 11 and 12 class are provided to increase enrollment of girl students to encourage girl education.

Scholarship to special devyaang girl students Under Inclusive Education Disabled, scholarship of Rs 1000 and rs 500 uniform grant is given to girl students.

Free sanitary Napkins for girls students

For good health, cleanliness & awareness of girl students, free sanitary napkins are distributed among upper primary students.

Grant for sanitary napkin Machines in girls schools recently grant to install sanitary napkins in girls school provided to encourage girl education in punjab state.

All these facilities are given in Punjab Government schools to have more emphasis on girl education... Out of total 2,39,6271 students, number of girls students are still less than enrolled boys in government schools...1,21,7205 male students & 1,17,9066 girl students are studying in Government school...Still there is need to enroll more girl students in schools as some families still avoid to send their girls to schools due to their ignorance or unaware of facilities provided in Governmenal schools.

In the conclusion part or in the last ,we can say Education is everybody's right. No girl however poor,however desperate her country's situation is to be excluded from school . Education saves and improves the lives of girls and woman , ultimately leading to more equitable development,stronger families ,better services and better child health .Education has the power to transform girls' lives...

So let us come forward to stop sex selection and female foeticide. Save girl child . Emphasise on girl education to save our country.

Girls are would be mothers.. If mothers are well educated,they will give such training to their children as helps them to become good citizens . If mother is uneducated ,she will allow her children to grow into foolish citizens.

So educate girls so that they can creat their own sky and i wish them to lookup always becoz they can turn the tide by their passionate gaze & have potential to take their country on path of progress ,develoment and prosperity.

Rekha Mahajan
Dy DEO
Amritsar
7889172259

नवाचार

लाइब्रेरी

परिचय-----नाम प्रगति

वह स्थान जहां विभिन्न प्रकार के ज्ञान सूचनाओं आदि का संग्रह होता है।

लक्ष्य*200-250 पुस्तकें।

प्रगति की आवश्यकता क्यों पड़ी-_-----

प्रदेश में 1 अप्रैल से सत्र प्रारंभ हो जाता है सत्र 2019-20 में प्रवेश हो रहे थे। विद्यालय में प्रवेश के दौरान नए प्रवेशी बच्चों के लिए कई तरह के कार्यक्रमो का आयोजन भी किया जा रहा था जैसे माला पहनाकर सम्मान, सीनियर विद्यार्थियों द्वारा उनके कक्ष तक ले जाना, उपहार देना आदि। एक चुनौती भी हमारे सामने आ रही थी कि भारत सरकार, राज्य सरकार के द्वारा विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं प्रतिवर्ष आयोजित कराई जाती हैं जिनमें छात्रवृत्ति परीक्षाएं, नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षाएं , राजीव गांधी नवोदय विद्यालय परीक्षाएं, समाज कल्याण द्वारा संचालित विद्यालयों में प्रवेश हेतु परीक्षाएं आदि शामिल हैं।विद्यालय चाहता था कि विद्यालय के बच्चों को विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं की तैयारियां विद्यालय स्तर पर करायी जाएं जिसके लिए विभिन्न प्रकार की अलग-अलग पुस्तकों की आवश्यकता थी ताकि बच्चे स्व अध्ययन भी कर सकें और समय-समय पर उनको प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी भी कराई जा सके, तथा उनके ज्ञान के भंडार में भी इजाफा कराया जा सके इस चुनौती/ समस्या के समाधान के लिए विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों द्वारा एक बैठक कर विचार किया गया कि हम सभी अध्यापक गण अपने -अपने विषय एवम् अन्य पुस्तकों की व्यवस्था कर विद्यालय में रख लेते हैं और उनसे ही अपना शिक्षण कार्य एवं अन्य कार्य करेंगे, फिर मेरे मन मे विचार आया क्यों न हम अपने विद्यालय में शून्य निवेश करके एक लाइब्रेरी ही बना दें,

चुनौतियां-सबसे बड़ी चुनौती तो यह थी कि शून्य निवेश करके विद्यालय में *प्रगति *लाइब्रेरी कैसे बनेगी?
फिर भी चुनौती को स्वीकार करते हुए सोशल मीडिया एवं जनसंपर्क के माध्यम से मैंने कार्य करना प्रारंभ किया, जिसमें मुझे मेरे शिक्षक साथियों मित्रों, समुदाय का सहयोग मिलना प्रारंभ हुआ और मेरे हौसले को मानो चार चांद लग गए हो,
आज मेरे विद्यालय की प्रगति में 182 पुस्तके मौजूद हैं,

जिनमें मुख्य रूप से- -

* प्रश्न - उत्तर बैंक, सामान्य अध्ययन, विभिन्न प्रतियोगिता पर आधारित पुस्तकें महापुरुषों पर आधारित ,प्रेरक प्रसंग, एनसी ईआरटी बुक्स/सिलेबस बुक्स, स्वतंत्रता सेनानी ,मिसाइल मैन, मोदी जी, प्रतियोगिताओं, से संबंधित, क्विज संबंधित, भारत का इतिहास,भारत का संविधान ,अंबेडकर जीवनी , डिक्शनरी/शब्दकोश, आदि शामिल हैं।

प्रगति का उद्देश्य=

*सिलेबस संबंधी समस्या का समाधान

*देश प्रेम की भावना का विकास करना

*शिक्षा के प्रति रुचि उत्पन्न करना

*समूह में कार्य करने की भावना का विकास *अतिरिक्त ज्ञान वृद्धि *समय का सदुपयोग आदि

*प्रतियोगिताओं की तैयारी

*महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा पाकर खुद को देशभक्ति से जोड़ना आदि

आज मेरे विद्यालय की प्रगति नेशनल अवॉर्डी बन चुकी है

विगत 27 फरवरी 2020 से 3 मार्च 2020 तक आईआईटी दिल्ली में नवाचार कार्यक्रम के अंतर्गत एमएचआरडी माननीय रमेश पोखरियाल निशंक जी द्वारा नेशनल अवार्ड से सम्मानित किया गया।

स्रोत= शिक्षक साथी, मित्र ,समुदाय

लाभार्थी

प्यारे बच्चे एवं शिक्षक

अरविंद कुमार

(राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त)

प्रभारी प्रधानाध्यापक

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय

ढंडेरा, विकासखंड -नारसन जनपद -हरिद्वार

फोन नं-9758535162-9410164862

Kumararvind 60759@Gmail.com

शैक्षिक लेख

शिक्षक और विद्यार्थी के मध्य संबंध

विद्यालय परिवार में मुख्य रूप से शिक्षक और विद्यार्थी ही शिक्षण कार्य में अपनी महती भूमिका प्रदर्शित करते हैं, इन दोनों के मध्य जब तक आपसी संबंध मधुर नहीं होंगे तो वह एक दूसरे की भावनाओं को भली-भांति नहीं समझ पाएंगे और दोनों के मध्य जो अंतर क्रिया होनी चाहिए वह ठीक प्रकार से नहीं हो पाएगी। इसलिए आज मैं अपने अनुभव को आप सभी शिक्षक साथियों से साझा करने का प्रयास कर रहा हूं। अपने लगभग 20 वर्ष के शिक्षण अनुभव के आधार पर मैं यह आसानी से कह सकता हूं कि एक शिक्षक को अपने बालक की मन : स्थिति को समझना नितांत आवश्यक होगा क्योंकि विद्यालय में सभी बच्चे मानसिक स्तर से समान नहीं होते और उनके पारिवारिक वातावरण का भी उनके शिक्षण में काफी प्रभाव पड़ता है । प्रत्येक बालक की आवश्यकता और रूचि अलग अलग हो सकती है इसलिए शिक्षण कार्य के दौरान एक शिक्षक को अपने कक्षा में उन सभी बालकों पर अलग-अलग प्रकार से ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है, लेकिन समय अभाव के कारण प्रत्येक बालक की मन: स्थिति को प्रतिदिन समय नहीं दे पाता लेकिन फिर भी शिक्षक को अपने बालकों के बारे में जानकारी रखना और समय मिलते ही उस बालक को जिस प्रकार की अभिप्रेरणा की आवश्यकता है, उस प्रकार से उसको संबल प्रदान करें । उसके कंधे पर अपना हाथ रखे और शिक्षण कार्य में बच्चों को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है उनके निराकरण में मार्गदर्शक की भूमिका निभाए तो बच्चों का मनोबल बढ़ेगा और वह निरंतर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की ओर अग्रसर होगा । बच्चे थोड़े भावुक होते हैं उन्हें जितना अधिक स्नेह दिया जाएगा उतनी जल्दी ही सीखने के प्रति लालायित होंगे । कुछ बच्चे शिक्षक से भय के कारण दूरी बना कर चलते हैं , ऐसे बच्चों का मनोबल बढ़ाने के लिए उन्हें अपने साथी बालकों के माध्यम से कुछ सीखने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। फिर वही बालक थोड़ा बहुत सीखने पर प्रेरित होगा और शिक्षक के प्रति जो भय की भावना बालक के मन में थी वह दूर होगी और बालक बड़ी आसानी और सरलता से अपने शिक्षण कार्य को पूरा कर पाएगा । बच्चों को शिक्षण कार्य करवाते समय शिक्षक को बच्चों की रूचि स्तर का ध्यान रखना आवश्यक है। अगर किसी प्रसंग या विषय को हमने बालकों को सिखाया और बालक ठीक प्रकार से नहीं सीख पाए तो हमें शिक्षण विधि को बदलाव कर दूसरे तरीके से उस विषय को समझाना चाहिए। बच्चे कोमल होते हैं । उनकी भावनाएं बहुत ही कोमल होती हैं। उनकी भावनाओं का सम्मान किया जाना चाहिए और बच्चों से सदैव सकारात्मक भाषा का प्रयोग करना चाहिए । यदि शिक्षक बच्चों के मनोभावों को ठीक प्रकार से समझ कर और अपने आपको भी उन बच्चों में से एक छोटा बच्चा समझकर शिक्षण कार्य करवाएं तो यह अति उत्तम होगा ।

अब्दुल कलीम खान
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय
सेवली खंडेला जिला – सीकर,
राजस्थान, मोबाइल नंबर 9784 350 681

विद्यालय में नामांकन बढ़ाने हेतु मेरे प्रयास और उनकी सारगर्भिता

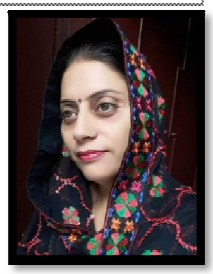

मैं सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल खुआसपुरहीरां में बतौर हिंदी अध्यापिका कार्यरत हूँ। विद्यालय में प्रति वर्ष लगभग साढ़े तीन सौ बच्चे दाखिल होते आए हैं। किन्तु गली मोहल्ले में निजी आदर्श स्कूलों के नाम पर खुली कुछ दुकानों के कारण नामांकन में कमी आने लगी । पंजाब स्कूल शिक्षा विभाग के सचिव आदरणीय श्री कृष्ण कुमार (आई ए एस) जी ने भी सरकारी स्कूलों में बच्चों के अधिक से अधिक नामांकन पर बल देते हुए प्रत्येक प्राध्यापक व अध्यापिक को क्रियाशील होने के लिए प्रोत्साहित किया। इसी श्रंखला में गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी मैंने अतिरिक्त स्कूलों व अन्य बच्चों घर घर जा कर उनके अभिभावकों से विचार विमर्श किया और उनको नि: शुल्क शिक्षा के साथ साथ उन सभी सहूलियतों के बारे में अवगत कराया जो निजी स्कूलों में बहुत बड़ी राशि दे कर उनके बच्चे सीखते हैं जो सरकारी स्कूल में बिलकुल मुफ्त है ।

इसके इलावा मैंने गीत लिखकर व गा कर बच्चों व उनके परिवार जनों को अपने सरकारी स्कूल में नामांकन करवाने के लिए प्रेरित किया। मैंने स्कूल की दीवारों पर अलग अलग विषय और मौलिक शिक्षा वाले फ्लैकस बनवा कर लगवाए। अपने बच्चों से आत्मीयता बढ़ने व उनको रोज़ स्कूल आने को प्यार से समझाया करती हूँ। बैस्ट आउट आफ वेस्ट के माध्यम से बच्चों को बेकार चीजों से बढ़िया टी.एल.एम बनाना सिखाती हूँ, मेरे द्वारा बना बहुत सा ऐसा सामान विद्यालय में रखा गया है । इसी के साथ एक लेखिका होने के नाते अपने विद्यालय के विद्यार्थियों को भी साहित्य के साथ जोड़ रही हूँ, मेरे बच्चे सहर्ष कविता लिखना सीखते हैं।

इस में संदेह नहीं है कि आजकल सरकारी स्कूल में अध्यापक बहुत परिश्रम कर रहे हैं फिर भी आज अपनी तरफ से किए जाने वाले प्रयास यहाँ सांझे कर के सुखद अहसास हो रहा है । नवोदित क्रांति परिवार भारत की ओर से 3 फरवरी 2020 को नैशनल अवार्ड व पुरस्कार प्राप्त कर के मेरा दायित्व और भी अधिक बढ़ा है इस नवसंचार के कारण मैं शिक्षा के क्षेत्र व अपने विद्यालय के प्रति सम्पूर्ण समर्पित हूँ और भविष्य में भी रहूँगी ।

नि: संदेह अपने भारत के और भी अधिक गुणीजनों से बहुत कुछ नया सीखने की आशा रखती हूँ।

धन्यवाद ,

अंजू बाला
हिंदी मिस्ट्रैस
खुआसपुरहीरां,होशियारपुर, पंजाब.
ईमेल: anjuratti3@gmail.com

समझदार बालक

"मम्मी! मैं आज पाठशाला पढ़ने नहीं जाऊँगा ।" सोनू यकायक गम्भीर होते हुए कहाँ ।

"बेटा! पर अचानक आज क्यों नहीं जाना चाहते हो?"

मैं ने प्यार से पूछा। पिता ने अपने बेटे से कहा अगर आज कोई मुख्य विषय बताये गये तो तुम वे पूरा (Miss करोगे) छूट जाएगी। फिर तुम्हारी कक्षाध्यापक जी फोन करेंगे और पूछेंगे तो क्या बताऊँ?

"पापा! आज मेरे एक मित्र का जन्मदिन है और मेरे साथी उसे अच्छे से अच्छे उपहार दे रहे हैं और उन्हें मैं न दूँगा तो अच्छा नहीं होगा। कही हमारी दोस्ती में दरार न आ जाए।

" मम्मी! यदि मैं अपने मित्र को उपहार दूँ तो 100 - 150 रुपये का खर्च होगा। परन्तु मैं ऐसा नहीं करना चाहता हूँ क्योंकि मैं आप दोनों को जनता हूँ। आप घर - घर झाड़ू - पोछा करके कितना कमाती है। और पापा जिस दिन काम मिला तो कमाई नहीं तो कुछ नही। ऐसे में क्या मैं पैसा खर्च करना उचित है।

सोनू की बात सुनकर आश्चर्य रह गये। माँ ने कहा बेटा तुम बहुत समझदार हो। ठीक है तुम आज घर पर ही रहना। मैं तुम्हें आज मन पसंद खाना खिलाऊँगी।

पिता बोले "बेटा! अच्छा हुआ। तुम्हारी वज़ह से आज मुझे भी कुछ अच्छा खाने को मिलेगा। व्यर्थ खर्च भी बच जायेगा।

रोहित कुमार
School Assistant
जिला परिषद हाई स्कूल
नेदुनूर, कंदुकुर(मंडल), रंगा रेड्डी जिला, हैदराबाद.
नवोदय क्रांति परिवार पद : नैशनल मोटीवेटर तेलंगाना
दूरभाष नo : 7989226303
ई-मेल ID : krohit261@gmail.com

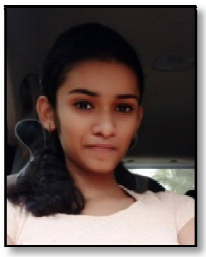

To my good old days...

I had seen the green fields being kissed by the breeze, and breeze chasing the clouds through the skies.

I had seen the clouds blessing world with the rain, and rain bringing love on our minds.

I had seen love being showered among the people, and people working hard for their family.

I had seen families with happiness filled in their minds and minds comprehending humanity.

But now... when i open my eyes, what i see, is darkness!

I see the structures upon the meadows, competing with each other to conquer the skies.

I see the skies drying up and grounds sweating down, with not a drop, to quench their thirst.

I see the grounds crowded with vehicles, and their horns blowing out, frightening my beloved ones away.

I see my present with not a touch of green in it, i see the greenary being completely vanished from my future.

Where is it? Who cares? Who wants them?

I just wish if i could run back..... to my good old days!

Nakshathra
Designation: +1 student
Address of my school: S.N.D.P. Neeleeshwaram,
higher secondary school,
Neeleeshwaram p.o, ernamkulam district, kerala
Phone number: 8075217382

सामुदायिक सहभागिता

सामुदायिक सहभागिता किसी भी संसथान के लिए बहुत हि आवश्यक है | बिना समुदाय की मदद से किसी भी संस्थान का कामयाब होना बहुत हि मुस्किल है बस इसी बात को लेकर हमने पाठशाला के आस-पास के गाँव के लोगो से स्कूल के बारे में चर्चा तथा उनके साथ बैठकर स्कूलहित के कार्यो के बारे में चर्चा करना शुरू कर दिया | तथा जब नया सत्र शुरू होने वाला था तब हमने घर-घर जाकर उन माता-पिता को सरकारी स्कूल के लिए मोटीवेट किया जिनके बच्चे अंग्रेजी मीडियम स्कूल में पड़ते थे |हमने उनके बच्चो की पूर्ण रूप से जिम्मेवारी ली के उनके बच्चो की पढाई में कोई कमी नहीं आएगी जिसका परिणाम बहुत ही अच्छा आया |

- अप्रैल 2017 में बच्चो की संख्या 26 थी जो की 31 मार्च 2018 तक 38 पहुँच गई |
- अप्रैल 2018 में बच्चों की संख्या 32 थी जो की 31 मार्च 2019 तक 42 पहुँच गई |
- अप्रैल 2019 में बच्चों की संख्या 32 थी जो की सितम्बर 2019 तक 46 पहुँच गई |
- प्री-प्राइमरी में 2017 में 8 बच्चों का नामांकन हुआ |
- प्री-प्राइमरी में 2018 में 10 बच्चों का नामांकन हुआ |
- प्री-प्राइमरी में 2019 में 14 बच्चों का नामांकन हुआ |

हमने स्कूल में लगातार अभिभावको के साथ मीटिंग की तथा उनको आश्वस्त किया की उनके बच्चो को बेहतर शिक्षा प्रदान करेंगे | लोगो के साथ जुड़ने से बहुत ज्यादा फायदा मिला तथा लोगो की मदद से बहुत से कार्यो को बिना किसी समस्या के पूर्ण किया गया

कार्यो की रूपरेखा और लाभ :-

(1) हमारे विद्यालय में बच्चो के पास 3-3 वर्दियां है जो की अभिभावकों की सहमती से लगाई गई | सोमवार, मंगलवार को स्मार्ट ड्रेस जिसमे टाई, बेल्ट, शर्ट,पेंट आदि शामिल है , बुधवार, वीरवार को सरकार द्वारा दी गई वर्दी के साथ टाई,बेल्ट,वर्दी के जूते, शुक्रवार, शनिवार को स्मार्ट टी-शर्ट और ट्राउजर लगाई गई है | इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि बच्चे हमेशा ही साफ़-सुथरे कपड़ो में स्कूल आये है | तथा उनका उनके मन से जो अंग्रेजी स्कूल के बच्चो को लेकर भावना थी के टाई-बेल्ट, व् स्मार्ट ड्रेस वाले हि अच्छे स्कूल होते है ख़त्म हो गयी | जिससे बच्चो का मनोबल बढ़ा है तथा अभिभावकों का नजरिया भी सरकारी स्कूल के प्रति बदलने लगा है |

(2) सरकार और विभाग और समुदाय की मदद से हमारे विद्यालय में आज सभी कमरों में टाइल लगी है | आज हमारा विद्यालय बहुत ही सुन्दर है |तथा जो कोई भी उसे देखता है उसका नजरिया सरकारी स्कूलो के प्रति बदल जाता है की सरकारी स्कूल ऐसे भी होते है | आज सभी अभिभावक बहुत ही खुश है | आज बच्चे पाठशाला के किसी भी कोने में बैठ सकते है उन्हें ड्रेस खराब होने का

भय बिल्कुल भी नहीं है | बच्चे जिस तरह स्कूल साफ़-सुथरे आते है उसी तरह घर जाते है जिससे उनका रुझान स्वच्छता की और बढ़ा है |

(3) स्कूल में हर महीने सिर्फ smc को न बुलाकर सभी अभिभावकों को बुलाया जाता है तथा उनके बच्चो से सम्बंधित हर प्रकार की चर्चा की जाती है इसका बहुत लाभ मिला पाठशाला में बच्चो की अनुपस्तिथि बहुत ही कम हो गई है जो की केवल अभिभावकों के सहयोग से हुआ | आज अगर कोई बच्चा किसी कारण से स्कूल नहीं आया तो पहले अभिभावक स्कूल अध्यापक को इसकी जानकारी फोन पर देते है तथा न आने की वजह भी बताते है ,जिससे अगले दिन बच्चा बिना किसी डर से स्कूल आता है |

(4) आज से 2-3 वर्ष पहले स्कूल का मैदान पूर्ण रूप से कच्चा था तथा मैदान में घास हि घास होता था जिससे कि बच्चो को कीड़ा-काँटा लगने का डर लगा रहता था सभी अभिभावकों ने मिलकर पंचायत के सहयोग से खेल मैदान व् खेल वाटिका जो की पहले टूटी –फूटी थी का निर्माण किया गया |अब खेल वाटिका को पूरी तरह पक्का कर दिया जिससे बच्चों के गिरने का भय खत्म हो गया है | ये सब कुछ सिर्फ सामुदायिक सहभागिता के कारण संभव हुआ |

(5) साफ़ – सुथरा माहोल मिलने पर सभी बच्चो का कॉन्फिडेंस लेवल में बढ़ोतरी हुई है | अब बच्चे स्कूल आने को पहले से ज्यादा रूचि दिखाते है |

(6) सभी अभिभावकों को समय-समय पर उनके बच्चो के बारे में पूर्ण जानकारी दी जाती है तथा उपचारात्मक राय भी दी जाती है के वे अपने बछको को घर पर कैसे स्कूल का कार्य करवाए | जिसका परिणाम यह हुआ की अभिभावकों की सहभागिता से बच्चो का लर्निंग लेवल में वृद्धि हुई है तथा बच्चे अब जिम्मेदारी के साथ होमवर्क करके आते है |

(7) हर मीटिंग में अभिभावकों की उपस्तिथि बढ़ रही है जो की बच्चो और स्कूल के लिए बहुत ही लाभकारी है |

(8) मीटिंग में सभी अभिभावकों को स्कूल में आने वाली ग्रांट्स के बारे में बताया जाता है तथा उसको कैसे खर्च किया जाये ये भी उनके पास बताया जाता है जिससे अभिभावकों की स्कूल के प्रति रूचि बढ़ी है तथा वे स्कूल की हर एक काम में अपना योगदान देने से पीछे नहीं हटते |

कैलाश ठाकुर
विद्यालय (नवोदय) में पद – जे.बी.टी. (स्टेट मोटिवेटर)
विद्यालय- राजकीय प्राथमिक विद्यालय महादेव,
केंद्र – मटूली , शिक्षाखंड – रामशहर , जिला – सोलन ,
हि.प्र. फोन न- 9857100883
Email – kailash6346@gmail.com

शैक्षणिक लेख

ढहती ग्रामीण शिक्षा ब्यवस्था और पलायन

वर्तमान समय मे हमारी सम्पूर्ण सरकारी शिक्षा ब्यवस्था प्रश्नों के घेरे में है।गुणवत्ता में ह्रास,घटती छात्र संख्या और लगातार बंद होते विद्यालय इन प्रश्नों को और बड़ा कर रहे हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में तो शिक्षण ब्यवस्था की स्थिति और भी भयावह है एकल अध्यापक संचालित न्यून छात्र संख्या वाले यह विद्यालय बंदी की राह जोह रहे हैं।

समाज का एक बहुत बड़ा तबका जहां इसके लिए सुस्त सरकारी ब्यवस्था को कोस रहा है वहीं ऐसे लोगों की भी कमी नही है जो सम्पूर्ण रूप से इसके लिए अध्यापकों को दोषी मानते हैं।

आज से 25-30साल पहले तक किसी भी प्राथमिक विद्यालय की स्थापना 3-4 गाँव के मध्य की जाती थी जिससे सभी गांव के बच्चे वहां पढ़ने आ सकें। छात्रों की कक्षा-1में प्रवेश की औसत आयु 8-9वर्ष होती थी और वे अपने गाँव के अन्य बच्चों के साथ सुगमता से विद्यालय पहुंच जाते थे।प्रत्येक विद्यालय में 100-150 बच्चे होना सामान्य बात थी सभी जातियों और वर्गों के छात्र एक साथ शिक्षा ग्रहण करते थे।अध्यापकों का निवास विद्यालय भवन या उसके नजदीक ही होता था इसलिए अध्यापक छात्रों से वातसल्य भाव रखते हुए अतिरिक्त शिक्षण तो करते ही थे उनके साथ खेलते भी थे।

फिर आयी विकास की आंधी शिक्षा के प्रसार के नाम पर हर गाँव और मोहल्ले में नए स्कूल खुलने लगे तो छात्र भी बंटने लगे,सामाजिक जागरूकता आयी तो प्रत्येक परिवार में बच्चों की संख्या घटने लगी।जिसका सीधा असर विद्यालय की छात्र संख्या पर पड़ा।फलतः विद्यालयों में अध्यापक भी घटा दिए गए।अब अभिभावक ऐसे विधालयों में क्यों अपने पाल्य को भर्ती करेंगे जहां पूरे अध्यापक ही न हों।छात्र और कम हो गए।

इस रिक्तता को भरने के लिए कुकुरमुत्तों की तरह अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा की दुकानें उगने लगी।जो केवल अंग्रेजी भाषा के महत्व का गुणगान कर रही थी।विकल्प बढ़े तो अभिभावकों का सम्पन्न वर्ग इन की तरफ आकृषित हो गया और बच्चों की पढ़ाई के नाम पर कस्बों और छोटे-बड़े शहरों की तरफ पलायन करने लगा।

पहाड़ों में पलायन का एक प्रमुख कारण ग्रामीण खेती का अलाभकारी बनना भी हो गया अल्प सिंचाई और सीमित साधनों से हाड़तोड़ मेहनत से कमाई फसल को जब बन्दर,लंगूर और

जंगली सुअर नष्ट करने लगे तो किसान को खेती घाटे का सौदा लगने लगी।उसने मेहनत मजदूरी के लिए शहरों का रुख किया और साथ ही उसका परिवार भी पलायन कर गया।गाँव मे बचे कुछ बुजुर्ग और वह निर्धन वर्ग जिसके पास थोड़ी से खेती के अलावा कोई विकल्प न था।

ग्रामीण विद्यालयों के लिए पलायन एक अभिशाप बन गया ।जब तक तंत्र की नींद टूटी गाँव खाली और विद्यालय सुने हो चुके थे। पर 'जब जागो तभी सबेरा'की उक्ति को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा पूरे देश मे समान शिक्षा के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए प्राथमिक शिक्षा को अंग्रेजी माध्यम में,ncert की पुस्तकोंके साथ लागू गया है।शिक्षकों को इसके लिए प्रशिक्षण दिए जा रहे हैं।मध्यान भोजन योजना,मुफ्त शिक्षा,गणवेश, पाठ्यपुस्तकें,स्वास्थ्य परीक्षण , विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियां आदर्श विद्यालयों की स्थापना और कई आकर्षक योजनाएं छात्रों के लिए लागू की गई हैं जिनके सुखद परिणाम दिखने लगे हैं।

लेकिन मेरी नजर में ग्रामीण विद्यालय तभी बचेंगे जब गांव के व्यक्ति को गाँव मे ही रोजगार उपलब्ध होगा।हमें उसके लिए खेती को नई तकनीक से जोड़ना होगा।खेती के उपकरणों का निर्माण और मरम्मत के लिए किसानों को प्रशिक्षण देना होगा।उनकी उपज का उचित मूल्य और बाजार उपलब्ध करवाने के लिए प्रयास करने होंगे।इसके अलावा पशु पालन,मौन पालन मुर्गी पालन और मत्स्य पालन को भी प्रोत्साहित करना होगा जिससे किसान की आमदनी बढ़ सके।सामाजिक सुरक्षा के लिए उसे निःशुल्क चिकित्सा का लाभ मिले और एक निश्चित धनराशि प्रोत्साहन भत्ते के रूप से उसे हर माह मिलनी चाहिए जिस से उसे गाँव मे ठहरना लाभदायक लगे।

ऐसे ही अन्य उपायों को अगर हम अपनाते हैं तो न केवल गांव की आर्थिकी सुदृढ़ होगी बल्कि गांव का शैक्षिक माहौल में भी गुणवत्तापरक परिवर्तन होगा।

कमलेश बलूनी
पद-सहायक अध्यापक- विज्ञान
राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय no-5
पौड़ी, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड,246001
संपर्क सूत्र-9456329671,8979888520
Mail- balunikamlesh00@gmail.com

शैक्षणिक लेख

सकारात्मक सोच

हम सभी को यह अच्छी तरह से मालूम है कि,आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी और एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा के कारण या यूं कह लीजिए कि,हर चीज में एक दूसरे से आगे निकलने की मानसिकता के कारण,व्यक्ति के स्वभाव में बेरुखी, चिड़चिड़ापन तथा नकारात्मक विचारों का मन में आना एक आम बात सी होती जा रही है।इन नकारात्मक विचारों से प्रत्येक व्यक्ति निजात तो पाना चाहता है लेकिन चाह कर भी इन नकारात्मक विचारों से निजात नहीं मिल पाती है, ऐसी स्थिति में एक दूसरे के प्रति बढ़ती हुई नकारात्मक प्रवृति आपके अच्छे खासे गतिमान जीवन को उन्नति के रास्ते से नीचे की ओर धकेल देती है। इन नकारात्मक विचारों से मुक्ति दिलवाने में हमारा घर और हमारा परिवार अहम भूमिका का निर्वहन कर सकता है,सही मायने में यदि देखा जाए तो हमारा घर ही हमारी असली पहचान होता है और हमें सही ढंग से स्थापित करता है।घर की सीमा रेखा के बीच हम जो कुछ भी करते हैं वह हमारे अच्छे संस्कार, व्यवहार तथा पारदर्शी कार्यशैली को प्रदर्शित करता है। विशेषज्ञों द्वारा की गई अनेक शोधों के अनुसार यह भी सामने आ चुका है कि, अपने घर की साजसज्जा करने से,उसे आकर्षक बनाने से व्यक्ति के विचारों में सकारात्मक वृद्धि होती है।हमें प्रत्येक दिन अपने काम पर जाते वक्त तथा सोने से पहले अपने बिस्तर को साफ सुथरा करना चाहिए तथा तकियों, बेडशीट आदि को बदलते रहना चाहिए, प्रत्येक दिन तीन-चार मिनट तक यह काम करना आपके अपने घर के प्रति रुझान/नजरिए में अत्यधिक वृद्धि करेगा,और आत्मीयता का आभास करता रहेगा।यदि वास्तव में हम और आप अपने घर को स्वर्ग बनाना चाहते हैं तो प्रत्येक दिन घर को व्यवस्थित रखने का प्रयास करें इधर,-उधर फैली हुई चीजों को वर्गीकृत करके अपने- अपने स्थान/जगह पर रखने का प्रयास करें,ताकि आवश्यकता पड़ने पर प्रत्येक वस्तु यथाशीघ्र मिल सके, ऐसा व्यवस्थित घर सभी को आकर्षित करता है और पसंद आता है,साथ ही

सभी पारिवारिक सदस्यों में नई उमंग नई उर्जा भी पैदा करता है।यदि आप चाहें और घर के किसी भी सदस्य को कोई परेशानी न हो तो आप स्वयं को तरोताजा रखने के लिए अपनी पसंद का संगीत हल्की आवाज में घर में बजा सकते हैं।शाम को ड्यूटी से घर पहुंचने के पश्चात पूरे दिन के अच्छे पलों,अनुभवों को अपनी डायरी में नोट करने का प्रयास करना चाहिए छुट्टी के दिन आराम से घर पर सभी सदस्यों के साथ समय बिताना चाहिए घर के बड़े बुजुर्गों की खूब सेवा करनी चाहिए उनसे तथा बच्चों से खूब बातचीत करनी चाहिए,मतलब यह है कि सभी को अपनी अपनी बातों को रखने की खुली आजादी दी जनी चाहिए। अवकाश के दिन का भरपूर उपयोग करने के लिए अपने बगीचे के फूलों की क्यारियों की काटछांट, खाद पानी देने का कार्य जरूर करना चाहिए,घर की साफ सफाई भी बराबर करनी चाहिए,इससे नकारात्मक प्रवृत्तियां समूल नष्ट हो जाती हैं।ये सभी बेहतरीन आदतें यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में अपनाने लगे,तथा अन्य लोगों को भी प्रेरित करता रहे,तो निश्चित रूप से उनके जीवन में सकारात्मक सोच का पदार्पण तीव्रता से होता रहेगा वह हर कसौटी पर खरा उतरने का प्रयास करता रहेगा।जीवन यापन की समस्त प्रक्रियाएं निर्विवाद रूप से अपने चरमोत्कर्ष की ओर अग्रसर हो सकेंगी और तभी आप दूसरों के लिए भी अच्छी सोच, अच्छा नजरिया रख पाएंगे,और सभी की भावनाओं का सम्मान करना सीख पाएंगे।

राजीव थपलियाल,

सहायक अध्यापक

गणित, राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय,

सुखरो देवी कोटद्वार, पौड़ी गढ़वाल उत्तराखंड,

7500803263 , 7906569853 rajeevthapliyal287@gmail.com

Idea

Celebration of curricular and co curricular week and conclusion day in r/o GPS SHELLI Edu. Block. Dhundan Distt. Solan H. P

Description and step for Idea implementation

1. School staff select various activities those are based on academic and sports (curricular and co-curricular)

2. As the school has parents sports club. Parents are selected as a moderator for conducting different activities.

3. Selection of week and conclusion day for the event.

4. In the entire week one hour time is being decided for preparation of conclusion day. (activities are taken up from syllabus too so there is propper management of time)

5 now at the conclusion day as the parents are of propper awareness conduct the activities with the help of school staff.

6. Appropriate appreciation (awards) for all participants for their performance.

In this innovative process parents and students show great sense of responsibility and enthusiasm as they are also observ the performance of thier ward.

Daleep kumar

Jbt Gps shelli

Mobile no. 9882133165

Permanent address. Vill. Simmu po.

Piplughat. Teh. Arki Distt. Solan. Hp pin . 173235

EMAIL ID. dalipsimmu1987@gmail.com

नवाचार

संख्या चक्र

निर्माण सामग्री :

लकड़ी के टुकड़े, चार्ट, मार्कर गोंद आदि।

लकड़ी के तीन टुकड़े लेकर एक दूसरे के ऊपर रखकर बराबर काटकर एक फ्रेम तैयार किया। एक और लकड़ी का फ्रेम बनाया जिस पर 3 खाने बनाए जिनके ऊपर इकाई दहाई सैकड़ा ones tense hundred चार्ट लगाकर लिखा। पहले के तीन टुकड़ों पर बराबर करके 0से 9 तक गिनती लिखी। तीनों टुकड़ों को बराबर रखकर इकाई दहाई सैकड़ा माली फ्रेम को ऊपर रखकर 1 नेट से जोड़ा और संख्या चक्कर बनाया। जिस तरह से चित्र में दिखाया गया है।

प्रयोग:

संख्या चक्कर में संख्या को निम्न गतिविधि द्वारा दर्शाया जा सकता है

ऊपर वाली फ्रेम में तीन बने खानों में नीचे के चक्रों को घुमा कर संख्या प्राप्त की जा सकती है जैसे यदि हमने 125 लिखना है तो ऊपर वाली फ्रेम में इकाई वाले चक्कर को 5 इकाई खाने में घुमाया जाएगा 2 को दहाई के खाने में घुमाया जाएगा उसके बाद सैकड़ा वाले खाने में चक्कर को घुमा कर एक खा जाएगा इस प्रकार 5 इकाई दो दहाई एक सैकड़ा प्रदर्शित होगा जिसे बच्चे आसानी से पढ़ सकेंगे इस तरह संख्या चक्कर से बच्चे 0से 999 तक संख्या बनाएंगे।

लाभ:

1. यहां संख्या चक्कर लर्निंग आउटकम्स को निम्न प्रकार से प्राप्त करेगा: a. कक्षा एक के लिए 0 से 9 तक संख्या समझ। b. कक्षा 2 के लिए 10 से 99 तक संख्या समझ। c. कक्षा 3 के लिए 100 से 999 तक संख्याओं की समझ।
2. बच्चों को इकाई दहाई सैकड़ा की समझ होना
3. 0 से 999 तक संख्याओं का स्थानीय मान कि समझ होना
4. यह संख्या चक्कर बच्चों को हिंदी व अंग्रेजी माध्यम दोनों से संख्याएं लिखना व पढ़ना विकसित कर सकता है।

अशोक कुमार, प्राथमिक शिक्षक
सदस्य नवोदय क्रांति परिवार भारत
विद्यालय: राजकीय प्राथमिक पाठशाला ज्योरा
शिक्षा खंड झंडुत्ता जिला बिलासपुर हिमाचल प्रदेश
फोन नंबर 8219535285
ई-मेल ashokdhiman117@gmail.com

एकता का त्यौहार

हमारे केरल भर में माननेवाला एक त्योहार है "ओणम"। यह त्योहार केरल की संस्कृति व सभ्यता का वाहक है ।

ओणम केरलीयों का देशीय त्योहार है । प्राचीन काल में 'महाबली' नामक एक राजा केरल में शासन किये धे । उनका शासन काल सुख ओर वैभव का समय धा । इसलिए केरलीयों के मन चुराए राजा महाबली की स्मृति को बनाए रखने के लिए यह त्योहार मनाया जाता है ।

ओणम का त्योहार श्रावण के महीनों में आता है । श्रावण के महीने के अत्तम से दस दिन त्योहार है यह । इस समय केरल के हरेक पेड़ पौधे रंग बिरंगे फूल खिले, अनाज से लदी खेत इन सबो से सुन्दर बन जाती है । ओणम के दिन के विख्यात खेलों में नौकाविहार पुलीकलीकली, तिरुवाअथिरकली आति आते हैं |

सभी मानवों में एकता का संदेश देनेवाला त्योहार हैं ओणम | केरलीयों का उल्लास एवं विकास का जीता जागता प्रणाम है यह पर्व | यह त्योहार अत्यंत है मनोरम, सुन्दर, और महत्वपूर्ण है |

निषा. एस

एस. आर. वि. यू. पी. स्कूल

एस. माशुवन्नूर

एर्नाकुलम

केरला

लेखन

प्रयास

"विद्यालय में नामांकन बढ़ाने हेतू विगत वर्षों एवम् इस वर्ष किए गए प्रयास "

हमारा विद्यालय राजकीय प्राथमिक पाठशाला मकडोंन जमराडी केन्द्र गोयला शिक्षा खंड रामशहर में स्थित है। वर्तमान में इस विद्यालय में 18 बच्चे प्री प्राइमरी , 26 बच्चे प्राइमरी में कुल 44 बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। अपने विद्यालय में नामांकन को बढ़ाने के लिए हमारी विद्यालय प्रबन्धन समिति व विद्यालय का सम्पूर्ण स्टाफ सदैव प्रयासरत रहते हैं। नामांकन बढ़ाने के लिए विगत वर्षों में नामांकन बढ़ाने के लिए किए गए प्रयासों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार से है _

(1) स्कूल प्रबंधन समिति व अभिभावकों से निरंतर संवाद :

छात्र नामांकन को बढ़ाने के लिए हम स्कूल प्रबंधन समिति एवं अभिभावकों से निरंतर इस बारे में संवाद करते हैं । हमें इसके सार्थक परिणाम देखने को मिले हैं।

(2) विद्यालय के इंफ्रास्ट्रक्चर में सुधार :

गत विगत वर्षों में हमने अपने विद्यालय के इंफ्रास्ट्रक्चर में बहुत सुधार किए हैं। इसके अंतर्गत विद्यालय में लगभग 80 हजार की लागत की फ्लोर टाइल पूरे विद्यालय में लगवाई गई साथ ही लगभग 60 हजार के स्टील के डेस्को की व्यवस्था बच्चों के लिए की गई। यह सारी धनराशि विद्यालय को स्कूल प्रबन्धन समिति व अध्यापकों के प्रयास से दान के रूप में प्राप्त हुई। हमारे इस प्रयास से स्कूल के नामांकन में वृद्धि देखने को मिली।

(3) विद्यालय के कक्षा कक्षों का सौंदर्यकरण :

हमने बच्चों की रुचि को ध्यान में रखते हुए अपने विद्यालय के कक्षा कक्षों का सौंदर्य करण किया जिसके कारण बच्चे विद्यालय के प्रति आकर्षित हुए।

(4) प्री प्राइमरी कक्षाओं का पिछले 3 वर्षों से संचालन:

हमारे विद्यालय में पिछले 3 वर्षों से प्री प्राइमरी कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है। प्री प्राइमरी कक्षाओं से हमारे विद्यालय के नामांकन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है, इसी के परिणाम स्वरूप वर्तमान में हमारे विद्यालय में प्रथम कक्षा में 10 बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

(5) विद्यालय में एक अन्य स्मार्ट यूनिफार्म को लगवाना :

अपने विद्यालय में हमने सरकारी ड्रेस के साथ साथ एक अन्य स्मार्ट यूनिफार्म की व्यवस्था की है। इस स्मार्ट यूनिफार्म को अभिभावकों व विद्यालय के अध्यापकों के सहयोग से तैयार किया गया। छात्रों के नामांकन को बढ़ाने में हमें इस कार्य का लाभ मिला। इससे बच्चों के आत्मविश्वास में भी वृद्धि हुई है।

(6) बैग फ्री डे व बालसभा को अधिक रुचिकर बनाना :

हमने अपने विद्यालय में बैग फ्री डे व बालसभा दिवस को अधिक रूचिकर बनाया जिसके अंतर्गत विभिन्न बाल गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इससे भी नामांकन बढ़ाने में सहायता मिली है।

(7) विद्यालय में प्रत्येक बच्चे के जन्मोत्सव को सेलिब्रेट किया जाता है:

हमारे विद्यालय में प्रत्येक बच्चे के जन्मदिवस पर सभी बच्चों के बीच में मनाया जाता है। इस कार्य से बच्चों को विद्यालय में भी घर जैसा वातावरण प्रदान करने का प्रयास रहता है। सभी बच्चे इससे आनन्द की अनुभूति को प्राप्त करते हैं।

(8) विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का अधिक से अधिक क्रियान्वयन :

हमारे विद्यालय में बच्चों की रुचि को ध्यान में रखकर पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाता है। इससे बच्चे खेल खेल में सीखते हैं वह इन क्रियाओं में रूचिपूर्वक भाग लेते हैं।

(9) विद्यालय स्टाफ के अध्यापकों का नामांकन बढ़ाने हेतु डोर टू डोर अभियान चलाना:

बच्चों के नामांकन को बढ़ाने के लिए प्रत्येक वर्ष हमारे विद्यालय के अध्यापक डोर टू डोर अभियान चलाते है। इसके अंतर्गत घर घर जाकर लोगों से सरकारी विद्यालयों में बच्चों को सरकार के द्वारा विभिन्न सुविधाओं के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की जाती है व लोगों से अपने बच्चों को सरकारी विद्यालयों में दाखिला लेने के लिए प्रेरित किया जाता है। हमारे इन प्रयासों से नामांकन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण सहायता मिलती है।

(10) प्रत्येक वर्ष वार्षिक पारितोषिक दिवस का आयोजन :

हमारे विद्यालय में प्रत्येक वर्ष वार्षिक पारितोषिक दिवस का आयोजन किया जाता है। इस दिवस प्रत्येक बच्चे को शैक्षिक और अन्य गतिविधियों के आधार पर सम्मानित किया जाता है। इससे भी बच्चे स्कूल के प्रति आकर्षित होते हैं, तथा उनके आत्मविश्वास में भी वृद्धि देखने को मिलती है।

(11) स्वतंत्रता दिवस ,गणतंत्र दिवस ,शिक्षक दिवस ,बाल दिवस, पर्यावरण दिवस ,योग दिवस इत्यादि दिवसों में अभिभावकों व बच्चों की शत प्रतिशत भागीदारी सुनिश्चित करना :

हमारे विद्यालय में विभिन्न राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय दिवसों को धूमधाम से मनाया जाता है । इन दिवसों में हम सभी अभिभावकों , छात्रों , विद्यालय प्रबंधन समिति सदस्यों की शत प्रतिशत भागीदारी को सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार के आयोजनों से अभिभावकों का स्कूल के प्रति विश्वास बढ़ता है जिसका लाभ हमें नामांकन बढ़ोतरी के रूप में प्राप्त होता है।

(12) मुंबई की समाज सेवी संस्था के माध्यम से विद्यालय में " " खिलौना बैंक "की स्थापना की गई :

मुंबई की एक समाजसेवी संस्था के द्वारा हमारे विद्यालय का चयन खिलौना बैंक की स्थापना हेतु किया गया । इसके अंतर्गत हमारे विद्यालय में एक खिलौना बैंक का स्थापन किया गया इसके अंतर्गत हिंदी, इंग्लिश , गणित व ई वी एस विषयों से संबंधित गतिविधियों के खिलौने रखे गए हैं। इन खिलौनों से बच्चे खेल विधि के द्वारा सीखते हैं।

(13) पर्यावरण से समन्वय स्थापन हेतु अध्यापकों व बच्चों की सहभगिता से फुलवारी ,किचन गार्डन का निर्माण :

पर्यावरण व परिवेश से बच्चों को जोड़ने के लिए हमने अपने विद्यालय में फुलवारी व किचन गार्डन का निर्माण किया है। यह कार्य बच्चों का अध्यापकों की सहभागिता से किया गया। इस कार्य के द्वारा बच्चों को मृदा के विभिन्न प्रकारों , जैविक खाद इत्यादि के बारे में बताया गया।

(14) बच्चों के लिए शुद्ध जल व्यवस्था हेतु वाटर प्यूरीफायर व वाटर कूलर की उचित व्यवस्था :

हमने अपने विद्यालय में बच्चों के लिए शुद्ध जल व्यवस्था के हेतु वाटर प्यूरीफायर व वाटर कूलर की उचित व्यवस्था की है, इस प्रकार की स्वास्थ्य संबंधी व्यवस्थाओं का हमारे स्कूल में विद्यमान होना भी नामांकन को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुआ है।

(15) बच्चों के आत्मविश्वास वृद्धि हेतु प्रातः कालीन सभा में प्रत्येक छात्र की प्रतिभागिता को सुनिश्चित करना :

हमारे विद्यालय में प्रातः कालीन सभा में प्रत्येक बच्चे को आत्म अभिव्यक्ति हेतु मंच प्रदान किया जाता है इससे बच्चों के आत्मविश्वास में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है ।

(16) भाषण प्रतियोगिता ,सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, कला प्रतियोगिता , लेखन प्रतियोगिता का आयोजन :

हमारे विद्यालय में निरंतर प्रकार से भाषण प्रतियोगिता , सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता , कला प्रतियोगिता , लेखन प्रतियोगिता इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इन प्रतियोगिताओं के कारण बच्चों में शैक्षणिक गुणवत्ता की बढ़ोतरी हुई है जिसका लाभ हमें नामांकन के रूप में प्राप्त हुआ है।

(17) छात्र व छात्राओं के लिए विभिन्न खेलों के सामान की उचित व्यवस्था :

खेलों का बच्चों के जीवन में विशेष स्थान होता है अतः हमने अपने विद्यालय में लड़के और लड़कियों के लिए खेलों के सामान की उचित व्यवस्था की है। इसका लाभ हमें नामांकन के साथ साथ छात्र उपस्थिति में भी हुआ है।

(18) स्कूल विकास योजना व गतिविधि कैलेंडर के निर्माण में बच्चों की रुचि को विशेष स्थान प्रदान करना :

विद्यालय की विकास योजना व गतिविधि कैलेंडर के निर्माण में हम बच्चों की रुचि का विशेष ध्यान रखते हैं।

(19) विद्यालय में दृश्य श्रव्य सामग्री व कंप्यूटर शिक्षा की उचित व्यवस्था करना :

हमने अपने विद्यालय में बच्चों के नामांकन को बढ़ाने के लिए दृश्य श्रव्य सामग्री के साथ साथ कंप्यूटर शिक्षा का भी प्रावधान किया है। इससे हमें विद्यालय के नामांकन को बढ़ाने में सहायता मिली है ।

(20) बालिका शिक्षा व विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान कर उन्हें मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास करना :

बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए हमने अपने विद्यालय में विशेष प्रयास किए हैं इसके अंतर्गत प्रत्येक कक्षा में विभिन्न गतिविधियों में उत्कृष्ट स्थान रखने वाली बालिकाओं को विशेष प्रोत्साहन दिया जाता है। हमने विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान कर उन्हें मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया है। हमारे विद्यालय से विशेष आवश्यकता वाले एक बच्चे ने खंड स्तरीय आई ई डी खेलों में कई प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान हासिल किया इस बच्चे की हौसला अफजाई के लिए हमने उसे विशेष पारितोषिक देकर सम्मानित किया।

अतः उपरोक्त वर्णित हमारे विद्यालय के नामांकन को बढ़ाने के लिए कुछ एक छोटे-छोटे प्रयास हमने विगत वर्षों में किए हैं व इन प्रयासों की निरंतरता वर्तमान में भी जारी है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में हमारे सरकारी विद्यालयों में नामांकन की स्थिति और सुदृढ़ होगी।

कपिल राघव जे बी टी
राजकीय प्राथमिक पाठशाला
मकड़ोंन जमराडी ।
शिक्षा खंड रामशहर
जिला सोलन , हिमाचल प्रदेश ।

नवाचार

प्रातः कालीन प्रार्थना सभा

प्रार्थना सभा विद्यालय की एक प्रमुख गतिविधि है.यह कहा जाए कि प्रार्थना सभा विद्यालय का प्रतिबिंब है। प्रातः प्रार्थना स्थल पर होने वाली गतिविधि से यह ज्ञात हो जाता हैं कि उक्त विद्यालय के क्रियाकलापों और अनुशासन या स्तर क्या होगा. क्योंकि विद्यालय का शुभारंभ ही क्रियाकलापों के द्वारा शुरू होता हैं।

इस क्रम मे सर्वप्रथम गायत्री मंत्र, ईश वन्दना, देशगान, प्रतिज्ञा, सामान्य ज्ञान, नीति वचन, समाचार वाचन, कविता, कहानी, व्यायाम और योग इत्यादि गतिविधियां नियमित रूप से की जाती हैं।सर्वप्रथम इसमें ईश वन्दना कराई जाती हैं, जिसके द्वारा छात्र, छात्राओं मे एकाग्रता एंव आध्यात्मिकता का विकास होने के साथ ही साथ मन की शांति भी मिलती हैं।

तत्पश्चात देशगान कराया जाता हैं, जिससे छात्रो मे राष्ट्र प्रेम की भावना उत्पन्न होती हैं। प्रतिज्ञा के द्वारा पूरे राष्ट्र को एकता मे जोड़ने का संकल्प लिया जाता हैं। जिससे राष्ट्रीयता की भावना का उदय होता हैं. सामान्य ज्ञान द्वारा छात्रो का संज्ञानात्मक पक्ष मजबूत होता हैं, वहीं कविता और कहानियों के द्वारा सृजनात्मक शक्तियों का विकास होता हैं।

इस प्रकार शारिरिक व्यायाम व योग के द्वारा शारिरिक सुदृढता और मानसिक विकास सम्भव है। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रार्थना सम्बंधित गतिविधियां छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक है, जो कि विद्यालयी शिक्षा का मुख्य लक्ष्य भी हैं।

प्रार्थना सभा समय निर्धारण:-

प्रार्थना सभा गतिविधियों का पूर्व में ही निर्धारण कर लिया जाता हैं।तथा प्रत्येक दिवस के लिए प्रार्थना, समूह गान, निश्चित कर लिए जाते है।

गतिविधि	समय	गतिविधि	समय
प्रार्थना	3-4 मिनट	समूह गान	3 मिनट
प्रतिज्ञा	1 मिनट	नीति वचन/विचार	1 मिनट
समाचार	1 मिनट	सामान्य ज्ञान	1 मिनट
कविता/कहानी	3 मिनट	राष्ट्र गान	52 सेकेण्ड.

नोट:-

सप्ताह में प्रत्येक दिन अलग, अलग प्रार्थनाओं और समूह गान का निर्धारण पहले ही कर देना चाहिए. प्रतिज्ञा तीनों भाषाओं मे हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत में, प्रत्येक दिन अलग, अलग नीति वचन और विचार प्रत्येक छात्र द्वारा, समाचार स्थानीय, राष्ट्रीय, और अंतरराष्ट्रीय,खेल,शिक्षा, स्वास्थ्य सम्बंधित,सामान्य ज्ञान स्थानीय परिवेश को जोड़ते हुए प्रश्नों सहित, तथा कविता, कहानी, हावभाव के साथ और प्रेरणा दायक होनी चाहिये।

श्रीमती लक्ष्मी नैथानी, प्रधानाध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय काण्डा. कल्जीखाल
जिला पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड।
फोन. 9627289251. laxminaithani53@gmail.com

टी.एल.एम्.

रचना- अबेकस

कक्षा 1-5

विषय : गणित

सामग्री- चार्ट, कलर , थर्माकॉल,मोती।

विधि- थर्माकॉल का बाक्स बनाने के बाद उसमे लकडी की डंडी लगाकर उसमे मोती पिरो दे ।बाक्स पर कलर पेपर लगाकर अबेकस लिख दे।

रचनाकार- ऋषि कुमार गुप्ता (स अ) ब्लाक मोटीवेटर नवोदय क्रांति

मो न - 7052992005

ई मेल -rishiglaitm@gmail.com

विद्यालय का नाम- कन्या प्राथमिक विद्यालय गुगरापुर कन्नौज

रचना- गिनती डिब्बा

कक्षा 1 ,2

विषय : गणित

सामग्री- चार्ट, कलर,गोंद, जूते का डिब्बा ,कलर कागज

विधि-जूते के डिब्बा पर कलर कागज चढाने के बाद उसके ऊपर 0-9 तक सभी अंक लिखकर ,कागज की पतली पट्टी 0-9 तक कील के माध्यम से लगा दे ।

रचनाकार-मोनिका सक्सेना (स अ)

ब्लाक मोटीवेटर नवोदय क्रांति

मो न – 7706845108. ई मेल -monika.saxena 260595@gmail.com

विद्यालय का नाम- प्राथमिक विद्यालय गोसाईदासपुर अंग्रेजी माध्यम गुगरापुर कन्नौज

नवाचार

अंक चक्र

उद्देश्य---अंको की पहचान, संख्या निर्माण, छोटी-बडी संख्याओ की पहचान।

निर्माण सामग्री--गत्ता, रंगीन चार्ट , रंगीन मार्कर,गोंद, स्पार्कल शीट्स आदि।

निर्माण प्रक्रिया----इस अंक चक्र को बनाने के लिए एक मोटा गत्ता लेंगें। एक रंगीन चार्ट को गत्ते के उपर चिपकाएं गे। फिर गत्ते के 2छोटे चक्र व 2बडे चक्र काट लें गे।उन चक्रों के ऊपर 0-9तक अंक लिख लेंगे। फिर 2बडे चक्र नीचे रख कर उन पर छोटे चक्र रख कर पेंच द्वारा लगा लेंगे। उन चक्रों को इस तरह से गत्ते पर लगाएंगे जिससे दोनों पर 0-99तक संख्याओं का निर्माण हो सके।इस तरह हमारे अंक चक्र का निर्माण होगा।

क्रियान्वयन----सबसे पहले उन बच्चों का चयन किया जाएगा जिन्हें हमने अंकों की पहचान की जानकारी देनी है। इसके द्वारा बच्चों को छोटी-बडी संख्याओ व बराबर की संख्याओं का ज्ञान भी करवाया जा सकता है। यह विधि कक्षा प्रथम व द्वितीय के लिए उत्तम विधि है।

लाभ----इससे बच्चाखेल खेल से अंकों का ज्ञान प्राप्त करेगा। इससे बच्चा दो अंकीय संख्याओं का निर्माण करना सीखेगा। इसके माध्यम से बच्चा छोटी-बडी व बराबर की संख्याओं का ज्ञान प्राप्त करेगा। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया नीरस नहीं होगी।

दीप कुमार शर्मा
पाठशाला---रा, प्राथमिक केंद्र पाठशाला
श्री नयना देवी जी। शिक्षा खण्ड--स्वारघाट।
जिला बिलासपुर। हि प्र।

शिक्षक का समर्पण

शिक्षक जीवन एक दर्पण है। जो छात्र जीवन के लिए समर्पण है। शिक्षक के गुण महान है इसलिए ईश्वर स्वयं करता इसका गुणगान है।

इसलिए कहते हैं-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरा।

गुरुः साक्षात परम ब्रम्ह तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

एक आदर्श शिक्षक का जीवन पूरी तरह से अपने छात्र-छात्राओं के समर्पित होना चाहिए। शिक्षक का कर्तव्य है वह पूरी निष्ठा से अपने कर्तव्य का पालन करते हुए बच्चों का सर्वांगीण विकास करें। हर शिक्षक का लक्ष्य होना चाहिए कि शिक्षा में केवल पुस्तके ज्ञान ही न होकर बच्चों के नैतिक व सामाजिक,संस्कारिक,जीवन मूल्यों की शिक्षा के साथ अच्छी जीवन कौशल का भी होना आवश्यक है। जिससे बच्चे बड़े होकर अपने समाज को नैतिक व संस्कारिक बना सके। वह अपने आचरण से समाज में एक आदर्श स्थापित कर सकें। जिसके लिए हम शिक्षकों को आगे बढ़कर उनके भविष्य को उज्जवल बनाने हेतु समुदाय के साथ मिलकर अच्छी शिक्षा दें।

मेरी शाला जहां में कार्यरत हूं। वह एक पहाड़ी क्षेत्र है जहां विशेष पिछड़ी जनजाति कोरवा,पांडव निवास करते हैं। मैं उनके बीच में अभी चुनौतियों का सामना करते हुए उन्हें अच्छी शिक्षा देने का प्रयास कर रहा हूं। और मुझे विश्वास है कि मैं स्वयं इस कार्य में सतत प्रयासरत रहते हुए सफलता को प्राप्त करूंगा। साथ ही अपने आप को बच्चों की शिक्षा के प्रति समर्पित करने का प्रयास कर रहा हूं। जिससे कि वे शिक्षा के साथ-साथ नैतिक,सामाजिक,जीवन मूल्यों,आदर्शों,जीवन कौशल को अच्छी तरह से सीख सकें। जिससे वे जीवनपथ में आगे बढ़ कर अपना,अपने देश का, अपने गांव का,समाज का नाम रोशन कर सकें। हमारे बहुत से शिक्षक साथी अपने अथक प्रयास से इस सपने को जीवंत रूप प्रदान कर रहे हैं। वे सभी धन्यवाद के प्राप्त हैं। हमें भी उन सभी से प्रेरणा लेना चाहिए। वह हमारे प्रेरणा स्रोत हैं उन्हीं से प्रेरणा लेकर के हम सभी शिक्षक अपने आप को बच्चों के लिए समर्पित करें।

धन्यवाद

शिशुपाल साहू
सहायक शिक्षक (एलबी)
शासकीय प्राथमिक शाला रासकुरिया, संकुल,
खम्हार, विकासखंड -- धरमजयगढ़, जिला -- रायगढ़(छ. ग.)
मोबाइल नंबर -- 9340897522
ईमेल ई डी-- shishupal.s1226@gmail.com

अप्रैल दिन विशेष

1 अप्रैल - अप्रैल फूल्स डे, ओडिशा डे

2 अप्रैल - विश्व ऑटिज्म जागरूकता दिवस

5 अप्रैल - राष्ट्रीय सामुदायिक दिवस,
नेशनल मैरिटाइम डे (भारत)
समता दिवस (भारत)

7 अप्रैल - विश्व स्वास्थ्य दिवस
महिला चिकित्सा दिवस

8 अप्रैल - World Romani Day

9 अप्रैल - पराक्रम दिवस
(केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल)

10 अप्रैल - World Homeopathy Day

11 अप्रैल - National safe Motherhood Day

12 अप्रैल - वर्ल्ड डे ऑफ एविएशन
एंड कॉस्मानाटिक्स

13 अप्रैल - जलियांवाला बाग हत्याकांड
स्मृति दिवस

14 अप्रैल - डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जयंती
अग्निशमन दिवस

15 अप्रैल - World Art Day

16 अप्रैल - भारतीय रेल परिवहन दिवस(1853)

17 अप्रैल - विश्व हीमोफोलिया दिवस

18 अप्रैल - विश्व विरासत दिवस
आजाद हिंद फौज दिवस

19 अप्रैल - भारत द्वारा उपग्रह क्षेत्र में प्रवेश दिवस (1975)
विश्व यकृत दिवस
साइकिल दिवस

20 अप्रैल - डॉ हैनिमैन जन्मदिवस
(होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के जन्मदाता)

21 अप्रैल - National Civil Servies Day

22 अप्रैल - विश्व पृथ्वी दिवस
जल संसाधन दिवस

23 अप्रैल - विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस

24 अप्रैल - National Panchayati Raj Day

25 अप्रैल - World Malaria Day

26 अप्रैल - चेरनोबिल दिवस बौद्धिक संपदा अधिकार दिवस

28 अप्रैल - International Workers' Memorial Day

29 अप्रैल - International Dance Day

30 अप्रैल - International Jazz Day

जागृति लक्ष्मीदास अटारा
शिक्षिका - चेखला प्राइमरी स्कूल
तहसील : साणंद, जिला : अहमदाबाद
गुजरात
नेशनल मोटिवेटर
नवोदय क्रांति परिवार गुजरात, भारत

बिना परीक्षा प्रोन्नति उचित नहीं

लोकडाउन की वजह से सरकार ने कक्षा एक से ग्यारह तक के छात्रों को अगली कक्षा में प्रोन्नति देने का निर्णय लिया है।सतही तौर पर यह निर्णय सही प्रतीत होता है।लेकिन इससे न केवल शिक्षक बल्कि छात्रों को भी कई तरह की कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा।दरअसल ऊपर की कक्षाओं के तार निचली कक्षाओं से जुड़े होते हैं। इनमें से एक भी तार टूटने पर अध्ययन और अध्यापन का स्वर बेसुरा हो जाता है।इसे एक सरल उदाहरण के माध्यम से समझा जा सकता है ।मान लिया जाए कि कोई छात्र अभी कक्षा एक में अध्ययनरत है। वह गिनती जानता है लेकिन जोड़ का अभ्यास उसने नहीं किया है।अब सरकार के इस निर्णय से वह कक्षा दो में स्थान प्राप्त कर लेगा।कक्षा दो के पाठ्यक्रम के अनुसार जब शिक्षक गुणा का अभ्यास सिखाएंगे तो उसे समझने में कठिनाई होगी।क्योंकि गुणा हल करने के लिए जोड़ का ज्ञान होना आवश्यक है।उच्च कक्षा के छात्रों की तो समस्याएं अधिक जटिल हो जाएंगी।जिस छात्र ने निचली कक्षा में गुणा और भाग का गहन अभ्यास नहीं किया है,वह अगली कक्षा में वर्ग तथा घन पर आधारित प्रश्नों को हल नहीं कर पाएगा।

इसी तरह की समस्याएं प्रोन्नति से अगली कक्षा में आए उन सभी छात्रों को होगी जिन्हें पिछली कक्षा का समुचित ज्ञान नहीं है।कक्षा में शिक्षक द्वारा पढ़ाए गए पाठ का लाभ केवल उन्हीं छात्रों को मिल पाएगा जिन्होंने घर पर अभिभावक अथवा किसी अन्य की सहायता से पढ़ाई की होगी।सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वालों में ऐसे छात्रों की संख्या बहुत कम ही होगी।इसका मुख्य कारण है सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावकों का अशिक्षित अथवा अल्प शिक्षित होना।प्राइवेट विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को ऑनलाइन क्लास दी जा रही है, विभिन्न एप के माध्यम से उन्हें अगली कक्षा के लिए तैयार किया जा रहा है। लेकिन दुर्भाग्यवश ऐसी सुविधाएं सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को उपलब्ध नहीं है।उनकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति भी इसके प्रतिकूल है।इसके अतिरिक्त बिना परीक्षा के अगली कक्षा में छात्रों के क्रमांक का निर्धारण भी उचित नहीं है। अधिक योग्य छात्र का क्रमांक नीचे कर दिए जाने पर उसके अंदर हीन भावना घर कर जाती है।अब प्रोन्नति दिए जाने की स्थिति में शिक्षक अनुमान से ही छात्रों के क्रमांक का निर्धारण करेंगे।इसमें त्रुटियों की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है ।

दरअसल वर्तमान विद्यालयी व्यवस्था में परीक्षा ही एकमात्र प्रक्रिया है जिससे बच्चे के पाठ्यक्रम संबंधी वास्तविक योग्यता के बारे में जानकारी मिलती है ।इसके अभाव में बच्चे की कमियों और उसे भविष्य में होने वाली कठिनाईयों को नहीं समझा जा सकता है ।यही कारण है कि प्राइवेट विद्यालयों और कुछ सरकारी विद्यालयों में अर्द्ध वार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा के अतिरिक्त साप्ताहिक तथा मासिक परीक्षाएं भी ली जाती हैं ।परीक्षा छात्र को पढ़ाने के लिए शिक्षक को रणनीति बनाने में सहायक सिद्ध होती है।परीक्षा से ही शिक्षक को यह पता चल पाता है कि उसे छात्र को पढ़ाने के लिए किस स्तर और तकनीक का प्रयोग करना है।इस प्रकार बिना प्रतिस्पर्धा और मेहनत के अगली कक्षा में स्थान पाने वाला छात्र भी अपनी कमियों को जानने-समझने के अवसर से वंचित रह जाता है।छात्र को यह पता नहीं चल पाता है कि किस विषय में उसकी क्या स्थिति है। किस विषय में उसे अधिक मेहनत करना है और किस विषय में सामान्य रूप से पढ़ाई करने से भी काम चल सकता है।इन सबको जानने का एकमात्र उपाय परीक्षा ही है।आज जिन छात्रों को परीक्षा में छूट दी जा रही है उन्हें भविष्य की प्रतियोगी परीक्षाओं में कोई छूट नहीं मिलने वाली।जीवन भी पग-पग पर परीक्षा लेती है।जीवन की परीक्षा में कोई छूट नहीं मिलती तो विद्यालय की परीक्षा में क्यों?

-कल्याणमय आनंद

उत्क्रमित मध्य विद्यालय निझरा,

सोनैली, कटिहार-855114 (बिहार)

मोबाइल:9113166335

ईमेल:kalyanmayanand@gmail.com

शैक्षणिक लेख

आमतौर पर घुमंतु समुदाय से हर व्यक्ति वाकिफ है। अमूमन देश के कोने-कोने में नुक्कड़ पर नाच गाना का पर्दशन और तमाशा दिखाना के नाम से इन्हें जाना जाता है। समुदाय से जुड़े सदस्यों का जीवन रंग बिरंग होता है । यही कारण है पेट की आग बुझाने ये परपरागत व्यवसाय को नहीं छोड़ते। शिक्षा को महत्व नहीं देते। इनकी परवरिश ऐसी होती है कि ये स्कूली शिक्षा से विमुख हो जाते हैं।

दुर्ग जिला मुख्यालय से महज 9 किलोमीटर दूर ग्राम पंचायत सिरसा खुर्द में घुमंतु समुदाय की बस्ती है। यहां रहने वाले को सपेरा के नाम से जाना जाता है । ये स्वयं को छत्तीसगढ़ी पहाड़ी गोंड जाती का होना बताते है। इसी बस्ती के बच्चो को मैं शासन की योजना "सब पढ़े सब बढ़े" के तहत 2018-19 से शिक्षा देना शुरू किया है । जो अनवरत जारी है। इस वर्ष भी शासकीय प्राथमिक स्कूल सिरसा खुर्द में विशेष कक्षा लगाई जा रही है।

दरअसल शुरआत में कुछ बच्चों को स्कूल में दाखिला अवश्य कराया गया, लेकिन बाद में बच्चों की सुध नही ली। अशिक्षा, वस्वछंद विचारधारा के कारण अन्य सामान्य बच्चे की विचारधारा के साथ सपेरा बस्ती के बच्चे आपस मे घुल मिल नही पाए। यही कारण था कि बच्चे वैचारिक रूप से बहिष्कृत हुए, और बच्चों ने स्कूल आना बंद कर दिया। तब मैंने बच्चो को दोबारा स्कूल लाने का संकल्प लिया। दरअसल यह मेरे लिए चुनौती से कम नहीं था , क्योंकि ये बच्चे स्वछंद विचारधारा वाले समुदाय से नाता रखते है। 5 घंटा एक जगह बैठना सजा समझते थे। तब मैंने इस बस्ती के सभी बच्चों को एक ही कक्षा में उम्र के आधार पर शिक्षा देना शुरू किया। नवाचार करने के लिए और बच्चों को स्कूल लाने के लिए कई तरह का प्रयोग किया।

शुरुआत में बच्चों की संख्या काफी कम था। दर्ज संख्या को बढ़ाने मैं बस्ती पहुंची और मलिन बस्ती में रहने वाल अभिभावकों को समझाया । बस्ती में नुक्कड़ सभा के अलावा कक्षा लगाई व नवाचार का प्रयोग किया, तब कहीं जाकर बच्चे पूरे वर्ष स्कूल आए। स्कूल में मैंने सपेरा बस्ती के उन अभिभावकों को बुलाया जिनके बच्चे स्कूल आते है । उन्हें तब खुशी हुई जब उन्हें उनके बच्चे किताब पढ़ते मिले । मैं दिखाना चाहती थी जो अभिभावक अपने बच्चों से भिक्षा मंगाते थे आज वे पढ़ना सीख गए। मैंने बच्चों के साथ मिलकर मलिन सपेरा बस्ती में जयंती विशेष पर कई कार्यक्रम किए ।

मेरा ऐसा सोचना है कि इस बस्ती में 100 से अधिक बच्चों को एक निर्धारित उम्र से स्कूल जाने प्रेरित किया जाना चाहिए। इसके लिए आवश्यकता है कि सपेरा बस्ती में आंगनबाड़ी केंद्र के स्थापना हो। मैंने छोटा सा प्रयास करते हुए महिला एवं बाल विकास विभाग कार्यक्रम अधिकारी दुर्ग को आंगनबाड़ी केंद्र संचालित करने आवेदन भी सौंपा है, लेकिन अब तक विभाग ने आवेदन पर गंभीरतापूर्वक विचार ही नहीं कर पाई । खास बात यह है कि 2019 - 20 शैक्षणिक सत्र में 35 बच्चे विशेष कक्षा में अध्ययनरत हैं ।

श्रीमती नंदा देशमुख
विद्यालय में पद- सहायक शिक्षक
विद्यालय - शासकीय प्राथमिक शाला, सिरसा, खुर्द
जिला- दुर्ग, राज्य- छत्तीसगढ़
फ़ोन- 8349056256, 8349533005
ईमेल - nandadeshmukh@ gmail.com.

टी.एल.एम्.

प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा शिक्षण में डिकोडिंग का व्यवस्थित शिक्षण होना चाहिए ।

फ़्लैश कार्ड, शब्द पहिये तथा पासे के खेल का डिकोडिंग शिक्षण के लिए किया सफल प्रयोग।

आज प्राथमिक स्तर पर विद्यालयों में हिंदी भाषा शिक्षण में डिकोडिंग के लिए व्यवस्थित शिक्षण की जरूरत है। आओ,पहले यह जान लें कि डिकोडिंग क्या है?डॉ विजय कुमार चावला,हिंदी प्राध्यापक राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,क्योड़क का कहना है कि अक्षर ध्वनि सम्बन्धों के ज्ञान का प्रयोग करके किसी शब्द को प्रिंट से ध्वनि में बदलने कि प्रक्रिया को डिकोडिंग कहा जाता है।इसके अंतर्गत अलग-अलग वर्णों,अक्षरों,वर्ण–मात्राओं की ध्वनि को पहचानना,ध्वनियों को आपस में जोड़ना तथा पूरे शब्द को एक साथ उच्चरित करना या पढ़ना और अर्थ समझना शामिल है।डिकोडिंग में मुख्य रूप से दो बातें आती हैं – चिह्न ध्वनि का सह- संबंध तथा ध्वनियों का जोड़ना।उनका मानना है कि एक कुशल पाठक बनने के लिए यह सुनिश्चित करना होगा कि बच्चा डिकोड करना जल्दी और अच्छी तरह सीख जाए।अगर बच्चा कक्षा –1 और शुरुआती कक्षा -2 तक अच्छी डिकोडिंग क्षमता नहीं विकसित कर पाते, तो व आगे कि कक्षाओं में कमजोर पाठक बने रहते हैं।प्राथमिक स्तर पर डिकोडिंग सीखने की प्रक्रिया निम्न प्रकार से होनी चाहिए :-

- ध्वनि जागरूकता का विकास
- वर्ण /अक्षर ध्वनि परिचय
- ध्वनि यों को जोड़कर शब्द बोल्न या पढ़ना
- शब्द पहचान की क्षमता का विकास
- सुपरिचित{अक्षरों व शब्दों वाले }पाठ पढ़ने का अभ्यास
- कई शब्दों को दृश्य – शब्द के रूप में पढ़ते हुए प्रवाहपूर्वक डिकोडिंग करना

कक्षा कक्ष में डिकोडिंग का शिक्षण व्यवस्थित , स्पष्ट और क्रमबद्ध, तरीके से होना चाहिए।सर्वप्रथम शिक्षक को प्राथमिक स्तर पर शुरुआत में 5-6 वर्ण ही बच्चों को सिखाने चाहिए।इन्हीं वर्णो से ढ़ेर सारे शब्द बच्चा सीख जाता है।ऐसा होने से बच्चे डिकोडिंग के साथ - साथ अर्थ निर्माण की प्रक्रिया से जुड़े रहते हैं।इसके लिए वर्ण व अक्षर सिखाने का एक ऐसा क्रम काम में लिया जाए जिससे बच्चे कुछ वर्ण मात्रा की पहचान के साथ ही शब्द बनाना और पढ़ना सीखने लगे।बच्चों को कक्षा कक्ष में अभ्यास के बहित से मौके मिलने चाहिएँ जिनमें कई तरह की रोचक गतिविधियाँ और खेल शामिल हों । डिकोडिंग का शिक्षण बहशा

कालांश के एक- तिहाई समय से ज्यादा नहीं होना चाहिए।80-90 मिनट के दो कालांशों में से केवल 25-30 मिनट।

इसी संदर्भ में उनके द्वारा कक्षा पहली और दूसरी के बच्चों के डिकोडिंग के तहत फ्लैश कार्ड के माध्यम से,पासे की खेल के माध्यम से वर्ण व अक्षर की पहचान करवाई गई और फ्लैश कार्ड के माध्यम से बच्चों ने वर्ण व अक्षर की पहचान करते हुए शब्दों का निर्माण भी किया।इसी प्रकार स्व निर्मित शब्द पहिए के माध्यम से बच्चों ने आज शब्दों का निर्माण किया।हिंदी भाषा शिक्षण में डिकोडिंग एक अहम तत्व है।यदि बच्चा शुरुआती कक्षाओं में डिकोडिंग की दक्षता हासिल कर लेता है तो वह अर्थ निर्माण करते हुए भाषा की समझ विकसित करने में कामयाब हो जाता है।हमें प्राथमिक स्तर से ही बच्चों की डिकोडिंग की दक्षताएं विकसित कर लेनी चाहिए।इसके लिए विद्यालय में विभिन्न प्रकार के खेल करवाते हुए बच्चों से डिकोडिंग का अभ्यास करवाया जाना चाहिए ताकि बच्चे खेल - खेल में डिकोडिंग सीख जाएं और अर्थ निर्माण पर समय देने का उन्हें मौका मिले।उनका मानना है कि डिकोडिंग सिखाने के लिए निम्न सामग्री उपयोगी साबित हो सकती हैं :-

- वर्ण कार्ड - जिसमें वर्ण साफ और बड़ा – बड़ा लिखा हो।
- अक्षर कार्ड – अक्षरों के कार्ड।
- वर्ण चार्ट – वर्णों व अक्षरों के अभ्यास के लिए बड़े चार्ट।
- डिकोडिंग योग्य पाठ।
- वर्ण / अक्षर ग्रिड – ऐसी ग्रिड जिसमें वर्ण व अक्षर होते हैं।{नियमित व बेतरतीब}
- शब्द पहिया
- फ्लिप बोर्ड
- वर्ण /अक्षर पासा

डिकोडिंग के लिए बच्चों को अभ्यास के अधिक से अधिक मौके दिये जाने चाहिएँ।जो बच्चे डिकोडिंग सीखने में धीमी गति से बढ़ रहे हों,उन पर विशेष ध्यान देते हुए उन्हें लगातार अतिरिक्त मौके और अभ्यास दिये जाने चाहिएँ।जब बच्चा कक्षा में अच्छी तरह डिकोडिंग करने लग जाएगा,तो समझ लीजिए वह भाषा सीखने में सफल हो जाएगा ।

डॉ॰ विजय कुमार चावला,
हिन्दी प्राध्यापक {030013}
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
क्योड़क{2186} जिला-कैथल {हरियाणा}

.

प्रकृति और मानव

प्रकृति और मानव का रिश्ता फूल और खुशबू जैसा है । जिस प्रकार फूल के बिना खुशबू नही, उसी प्रकार प्रकृति के बिना मानव का कोई अस्तित्व नही हो सकता। यहां मै आपसे दो घटनाओं का जिक्र करना आवश्यक समझती हूं। पहली घटना मेरे घर के सामने के पार्क की है । चारो तरफ हरियाली होने के कारण अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य के दर्शन वहां होते है और पिछले कुछ दिनो से ना जाने कहां-कहां से भिन्न-भिन्न रंगो वाले ढेर सारे पक्षी भी यहां आकर मधुर कलरव करने लगे है। पार्क में सारा दिन चहल-पहल रहती है जो मौजूदा विकट परिस्थितियों में सरकार की रोक लगाने पर भी कम ही प्रभावित होती दिखाई दे रही है ।

दूसरी घटना एक वीडियो से सम्बन्धित है, जो पिछले कुछ समय से सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है।यह वीडियो पंजाब राज्य के जालंधर शहर मे रहने वाले अपने घरो की छतों से धौलाधार पर्वत शिखर की चांदी सी चमकती चोटियों को हर्ष और कौतूहल से निहार रहे है और प्रकृति के इस अदभुत दृश्य को अपने कैमरों में कैद कर रहे हैं। यहां ये बताना भी आवश्यक है कि इस पर्वत श्रृंखला और जालंधर के बीच की दूरी 200 कि मी से अधिक है और ऐसा मनोरम दृश्य यहां के निवासियों ने पहले कभी नही देखा था । दोनो उपरोक्त घटनाए प्रकृति के प्रति मानव प्रेम का सजीव चित्रण है । प्रकृति को निहारना, उसकी गोद में समय बिताना मानव को अत्यन्त प्रिय है । परन्तु जीवन की विडंबना देखिए कि मानव पहले प्रकृति को अनदेखा करके उसे हाशिए पर डालकर अपने लिए सुख सुविधाओं से परिपूर्ण घर का निर्माण करता है और अब वर्तमान विकट परिस्थतियों में जीवन बचाने के उद्देश्य से जब उसे उसी के घर मे रहने को कहा जाता है तो वह सुकून कि तलाश घर से बाहर पार्क मे कर रहा है । वातावरण के प्रदूषण के कारण जालंधर शहरवासियों को पर्वत श्रृंखला पहले कभी नजर नहीं आई परन्तु लॉकडाउन के चलते प्रदूषण का स्तर गिरने से उन्हें ये मनोरम दृश्य देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

आपने वो कहावत तो अवश्य ही सुनी होगी "बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ से खाए"
वर्तमान परिस्थितियों के संदर्भ में यह कहावत अक्षरश: सही साबित हो रही है।

मानव जानता है कि सच्चा सुकून उसे प्रकृति की गोद में ही मिलेगा तथापि सम्पन्नता और विलासता प्राप्ति हेतू विकास और आधुनिकता के नाम पर वह प्रकृति के अमूल्य संसाधनों का दोहन करने लगा, उसकी ज़रूरतें धीरे धीरे महत्वकक्षाओं में बदलती गई । उसने धरती की हरी - चुनर को तार तार कर दिया, पर्वत रूपी ताज की चमक को प्रदूषण के धुएं में धुंधला कर दिया, नदियों मे बहते नीर रूपी अमृत को विष में बदल दिया।

प्रकृति ने समय-समय पर सावधान किया। कभी बाढ़ के रूप में , कभी सूखे ओर सुनामी के रूप मे और अब कोरोना वायरस के रूप में परन्तु मानव प्रकृति की चेतावनी को अनसुना करके अपने तथाकित विकास और आधुनिकता की राह पर अनवरत चलता गया। नतीजा सबके सामने है। आज सम्पूर्ण विश्व महामारी की चपेट में है । इस महामारी का एक बड़ा पहलू दुनिया का विकास और विलासिता के लिए पागल हो जाना है जिसे कोरोना वायरस ने दिवालिया कर दिया है । गत सैकड़ों वर्षों से बेहतर जीवन शैली का अर्थ विलासिता से माना जाने लगा है, इसे ही विकास कहा जाने लगा और देखा -देखी इसके पीछे सब दौड़ने लगे | आज वही दौड़ सबके लिए घातक साबित हो रही है । कोरोना संक्रमण ने दुनिया के अधिकतर देशों में अपने पैर पसारे हैं जिसकी असल वजह हमारी जीवन शैली है जो मूल रूप से प्रकृति के विरुद्ध जा रही है। यह सिर्फ प्रकृति से छेड़छाड़ का परिणाम है जो इस समय प्रकृति दंड के रूप में कॉरोना वायरस का साथ दे रही है।

आज लॉकडाउन के रुप मे हमें पुर्नविचार का मौका मिला है । हमारी दौड़ती- भागती जिंदगी में ठहराव आया है यह प्रकृति का संकेत है कि हम विकास की अंधी दौड़ में रुक कर चिंतन और मनन करें, प्रकृति का अनावश्यक दोहन बंद करें। समस्त विश्व को एक परिवार समझे और निज स्वार्थ के स्थान पर समस्त विश्व के कल्याण की कामना करें। हम अपनी जिम्मदारियों को समझते हुए अपनी जरूरतों पर पुनर्विचार करें। विलासिता और आवश्यकता में अंतर को पहचानें। मां रूपी प्रकृति के प्रति अपना क्रूर व्यवहार रोके और हवा पानी को प्रदूषित करके स्वयं अपने पैरो पर कुल्हाड़ी मारने की मूर्खता न करें। जीवन बहुत खूबसरत है, इसे बचाएं, सावधानी रखें, सुरक्षित रहे, सरकार और प्रकृति प्रदत नियमो का पालन करें।

सुनीता सैनी
विज्ञान अध्यापिका
रा. व.मा. विद्यालय प्रतापगढ़
कुरुक्षेत्र हरियाणा
National Motivater

English V/S Vernacular

One of the major problems in the learning of English is the temperament of dealers whether it may be a teacher, a guardian, a mentor or a companion in endeavour to cater it to the taste of the masses. We generally degrade ourselves in order to be simple and effective. However while floating on the surface we generally forget the fact that the roots lie in the deep and ignore that all students are already using a bit of English words in their daily routine as English is not a foreign language anymore. We can cite an example of means of transport and there is not a single word which is not English like bus,truck,car,keep,aeroplane and even the parts of a cycle like handle, chain, seat cover, etc. are also English.

So the point is to let them interact with the new words of the target language. How can one learn swimming for driving without getting into a pool or a car. Obviously it is not possible and we have to give maximum exposure to the students and maximum here means maximum....., nothing less than that.

In a traditional Indian classroom where English is not everybody's cup of tea and even the English teachers start mingling the Vernaculars, who call it necessary and a helping hand , which proves exactly opposite at the eleventh hour but that is too late ,however, it not only decreases the taste and concentration of the students but they also take it otherwise and think their mother tongue to be inseparable....

making them prejudiced and lame at the end of the day.

What can be done now? And the answer to this question is as simple as the question is. In language learning, just focus on to the language you want your students to learn without giving any way to lame excuses. Secondly, after giving maximum exposure provide them the opportunity to the maximum extent so that they can become habitual to produce the sounds of the target language which is and should be the sole motto of the language learning.....

Dr Jitender Pal
Assistant professor
Diet kaithal
Haryana
M 9215246470

शैक्षणिक लेख

किसी भी वर्ण को उसके लिपि चिन्हों के द्वारा लिखा जाता है।उन वर्ण के लिपि चिन्हों का आकार पूर्व से निर्धारित होता है।यदि हम उसके आकर में किसी प्रकार का परिवर्तन करते हैं तो उस वर्ण की बनावट के साथ न्याय नहीं होगा।वह वर्ण अपने मूल आकार से भिन्न ही होगा। जब वह भिन्न होगा तो उससे बनने वाले शब्दों कि सुन्दरता भी नहीं होगी।जब शब्दों की सुन्दरता नहीं होगी तो जो भी वाक्य हम लिखेंगे वह सुन्दर नहीं बन पायेंगे।

प्राचीन युग मे लेखनी के लिए होल्डर फरडे की कलम से लिखते थे उसके बाद निब वाले पेन आते थे।उससे लिखते थे।उनसे हमारे पूर्वजों की लेखनी बहुत सुन्दर होती थी। लेकिन हमें तो वर्तमान समय की बात करनी है।

यहाँ बच्चे के पास प्राचीन युग वाले संसाधन नहीं है फिर भी उनकी लेखनी तो सुधारनी ही है। यहाँ एक बात बता चलूँ कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने एक जगह अपनी आत्मकथा में लिखा है कि मुझे अपनी लेखनी पर काफी शर्मिंदगी महसूस होती थी।यह शर्मिंदगी हमारे सानिध्य में आने वाले सभी महापुरुषों चाहे वह छोटा हो या बड़ा हो शिक्षक हो लिपिक हो या अन्य किसी सेवा में हो।उसे लिखना पड़ता है।और वह जो लिखे उसे हम उसे किस तरह सुन्दर बना सकते हैं उस पर विचार करें। लेखनी सुन्दर कैसे हो:-1.सर्वप्रथम लेखनी सुधारने व सुधरवाने वाले महानुभावों को इससे होने वाले लाभों के बारे में अवगत होना। 2. मानसिक रूप से तैयार होना कि मुझे अपनी लेखनी को सुन्दर बनाना है। और मैं इससे सुन्दर बनाकर ही रहूँगा।3. वर्णों के लिपि चिन्हों में काम मे आने वाली बुनियादी मोड़ो के बारे में पूर्ण जानकारी होना।4.अपनी हाथ की कोहनी का लिखते समय पूर्ण सीधा होना व पेंसिल या कलम को निश्चित दूरी से और सही तरीक़े से पकड़ना।5.वर्णों की बनावट नियमानुसार ही हो शब्दों में वर्णों के मध्य दूरी समान हो।6अधो रेखा(खड़ी रेखा)व शिरो रेखा(बड़ी रेखा) दोनों का सही उपयोग होना नितांत आवश्यक है।शिरोरेखा शब्दों व वर्णों के आर पार हो।7.अनावश्यक वर्णों व मात्राओं की बनावट के साथ खिलवाड़ न हों।8.प्राथमिक स्तर से ही बच्चों को अंग्रेजी की चार लाइन की अभ्यास पुस्तिका की तरह हिन्दी की दो लाइन की अभ्यास पुस्तिका का प्रयोग करने के लिए प्रेरित करें।9. कक्षा में जिन बच्चों की लेखनी सुन्दर है उन बच्चों की अभ्यास पुस्तिका सभी बच्चों को दिखाएं और इसके लिए उन्हें भी प्रेरित करें।10. बच्चों को प्रतिदिन एक पृष्ठ बोल बोल कर या देखकर लिखने के लिए प्रेरित करें।11.आपके अपने बच्चों की लेखनी में आप आशा से अधिक सुधार पाएंगे।थोड़ा धैर्य रखें। बच्चों को स्नेह दें। और उन्हें अभिप्रेरित करते रहें।

आपके अपने बालकों के सुखद भविष्य की कामना के साथ। आपका अपना नवोदय क्रांति का छोटा सिपाही। आपका भाई।

-अब्दुल कलीम खाँ (दायरा)
रा.उ.प्राथमिक
वियालय सेवली खण्डेला
चल दूरभाष-9784350681

धन्यवाद